साँपों की दुनिया

निवेदिता दास

साँपों की दुनियाँ

लेखिका

निवेदिता दास

प्रकाशक

मधु प्रकाशन

42, ताशकन्द मार्ग, इलाहाबाद-211001

SAPO KI DUNIYA

by NIVEDITA DAS

प्रकाशक :
मधु प्रकाशन
42, ताशकन्द मार्ग, इलाहाबाद 211001

© निवेदिता दास

मूल्य : सजिल्द रु० 20/-
पेपर बैक रु० 12/-

प्रथम संस्करण
1984

मुद्रक :
अशोक मुद्रण गृह
42, ताशकन्द मार्ग, इलाहाबाद-211001

प्रस्तावना

आज से सैकड़ों वर्ष पहले इस विशाल धरती पर रेंगने वाले जीवों का जन्म हुआ था। इस काल में कई ऐसे भीमकाय रेंगने वाले जीव भी थे जिनके विषय में पढ़कर आश्चर्य होता है।

इन विशाल रेंगने वाले जीवों के अन्तर्गत साँप, छिपकली, कछुआ और घड़ियाल जाति के जीव आते हैं। उस काल में आदि दानव सर्प भी हुआ करते थे। छिपकली परिवार में उड़ने वाली छिपकली, रंग बदलने वाली छिपकली और बड़ी-बड़ी छिपकलियों से लेकर घरों में रहने वाली छोटी छिपकलियाँ भी शामिल हैं।

साँप से हम अच्छी तरह से परिचित हैं। साँप संसार के सभी देशों में पाए जाते हैं। भिन्न-भिन्न देशों में इनके रंग, रूप और आकार में भिन्नता पाई जाती है। ऐसा कहा जाता है कि कुछ सर्प इतने भयंकर और विषैले होते हैं कि उनके फुफकार मात्र से ही दूर खड़े जानवरों में जहर का असर हो जाता है। अधिकतर साँप चूहों या अन्य जानवरों द्वारा बनाए गए बिलों में ही रहते हैं। कुछ साँप ऐसे भी हैं जो पानी में ही रहते हैं। परन्तु स्थल पर रहने वाले साँपों की संख्या सबसे अधिक है। उस काल के दानव सर्प के फॉसिल आज भी उपलब्ध हैं। ये सर्प 115 फुट तक लम्बे होते थे। इस सर्प परिवार की अंतिम कड़ी स्फेनोडोन छिपकली आज भी जीवित है। यह न्यूजीलैंड द्वीप में पाई जाती है। इस देश के आदिवासी माऊरी इन छिपकलियों को 'टुआटोरा' नाम से पुकारते हैं।

यह जानकर आश्चर्य होता है कि घरों में पाई जाने वाली छिपकली भी विशाल सर्प परिवार की ही एक सदस्य है। इस वंश के सर्पों की प्रायः 1892 विभिन्न जातियों का अब तक पता चला है।

छिपकलियाँ भी तरह-तरह के रंगों, आकृति और आकारों में मिलती हैं। कुछ छिपकलियाँ तो 23 फुट तक लम्बी होती है।

आलसी कछुआ तथा भयंकर घड़ियाल भी विशाल सर्प परिवार के ही सदस्य हैं। इनका शरीर कठोर खाल से ढका रहता है। इस कठोर खाल पर तेज तलवार का भी प्रभाव कम होता है। अमरीका का विशाल कछुआ तो इतना बड़ा होता है कि उसकी पीठ पर कोई आराम से पलथी मार कर बैठ भी सकता है।

इस पुस्तक में रहस्यों से भरे साँपों के विषय में बताया गया है। दानव सर्पों के विषय में रोमांचकारी बातें सरल एवं दिलचस्प ढंग से बताई गई हैं। आशा है बालक एवं बालिकाएँ मेरे इस प्रयास का स्वागत करेंगे।

—निवेदिता दास

विषय-सूची

1. **प्राचीन विशाल साँप** 1—10

स्फेनोडोन या टुआटोरा — डाइनोसोरिया — टेरासोरिया—इक्वियोसोरिया—प्लीसियोसोरिया—एनोमोडोनशिया

2. **साँपों के प्रकार** 11—54

विषदन्त—पाचन शक्ति—विषधारी साँप—नाग की जातियाँ—अजगर साँप—पौराणिक कथा—बिल में रहने वाले सर्प—कैलावरिआ—इरिक्स—जल में रहने वाले सर्प—अनकोंडा—वृक्ष पर रहने वाले साँप—कोड़ेदार साँप—

3. **साँप के शत्रु** 55—60

प्राचीन विशाल साँप

सर्पों के फॉसिलों से ज्ञात होता है कि सम्पूर्ण स्तनपायी जीवों तथा चिड़ियों के पूर्वज 'टुआटोरा' के ही सदृश थे। वैज्ञानिकों का ऐसा कहना है कि ये जीव बहुत कुछ 'टुआटोरा' से मिलता-जुलता रहा होगा।

फॉसिल सर्पों को छः श्रेणियों में विभाजित किया गया है। इनके नाम इस प्रकार हैं :—

1—स्फेनोडोन-आदिम

2—डाइनो सोरिया

3—थेरा सोरिया

4—इक्वियो सोरिया

5—प्लीसियो सोरिया

6—एनोमोडोनशिया

स्फेनोडोन या 'टुआटोरा' :

न्यूजीलैण्ड के निवासी माउरी सर्प को 'टुआटोरा' 'टुटाटीट' या 'टुआटारा' कहते हैं। उनकी भाषा में इसका अर्थ काँटेदार छिपकली है। प्राचीन समय में न्यूजीलैण्ड द्वीप में यह जीव रहता था, परन्तु अब कुछ उत्तरी द्वीपों में ही इसके दर्शन होते हैं।

ी सुअर, कुत्ते तथा बिल्ली इसके शत्रु हैं और माउरी जातियाँ
ो पकड़कर खा जाती हैं । परन्तु अब ये बिल बनाकर ऊबड़-
ड़ स्थानों में रहते हैं और थोड़ी-सी भी आहट पाकर अपने
ों में घुस जाते हैं । ये दिन में भी सोते हैं और पानी में लेटना
ा पसन्द करते हैं। पानी के भीतर ये घन्टों बिना साँस लिये आराम
ा करते हैं । ये मांसाहारी जीव हैं और छोटी-छोटी मछलियों,
ओं तथा कीट को खाते हैं । समुद्र के किनारे रहने वाले टुआ-
ा केकड़ों की श्रेणी के जीवों को खाते हैं। इनका बाहरी आकार
कली का जरूर है, परन्तु ये छिपकली से उतना ही भिन्न है,
नी छिपकली साँप से ।

टुआटोरा के बिल खोदने के समय एक समुद्री पक्षी, जिसको
ल कहते हैं, उसकी सहायता करता है और दोनों एक साथ
बिल में रहते हैं । इसके बिल का व्यास 4 या 5 इंच होता है ।
ा के द्वार से दो या तीन फुट अन्दर एक बड़ा कमरा होता है,
7 फुट लम्बा 1 फुट चौड़ा तथा 1/2 फुट ऊँचा होता है । यह
रा घास-पत्तियों से ढका होता है । द्वार से बड़े कमरे में जाने
लये पहले नीचे उतरना पड़ता है और फिर ऊपर चढ़ना पड़ता
इस बड़े कमरे के बायीं ओर प्रायः समुद्री पक्षी पेट्रिल रहता
और दाहिनी ओर 'टुआटोरा' ।

एक "टुआटोरा" दूसरे टुआटोरा को अपने बिल में नहीं आने
ा । उसके बिल में यदि कोई हाथ दे, तो वह बहुत जोर से

काट लेता है। युवा टुआटोरा के दोनों जबड़ों और तालु में भी दाँत होते हैं। परन्तु जैसे-जैसे उसकी आयु बढ़ती है, ये दाँत गिर जाते हैं और वह दन्तहीन हो जाता है। वह बड़ी शीघ्रता से दौड़ सकता है और पीछा करते हुए आदमी या कुत्ते को बड़े जोर से काट लेता है। रात्रि के समय बहुधा यह बड़ा कर्कश शब्द करता है।

नवम्बर से फरवरी तक मादा प्रायः 10 कड़े छिलकेदार अंडे रेतीले बिलों के अन्दर देती है, जिससे वे सूर्य की गरमी से गरम रह सकें। अगस्त महीने में अंडे के अन्दर बच्चे काफी बड़े हो जाते हैं, और जब वे 13 महीने के हो जाते हैं, तब अंडों से बाहर निकलकर घूमने-फिरने लगते हैं।

60 वर्ष पहले 'टुआटोरा' 15 रुपये से लेकर 23 रुपये तक में मिल जाता था। सन् 1914 में एक टुआटोरा 225 रुपये का खरीदा गया था, परन्तु अब कोई उसको बेच नहीं सकता। अब वह न्यूजीलैंड राज्य की ओर से ही मिल सकता है।

'टुआटोरा' प्रायः 3 फुट लम्बा होता है और उसकी पूँछ लम्बी तथा चपटी होती है। उसका सम्पूर्ण शरीर खालों से ढका हुआ होता है, जो नुकीली कीलों के समान उठे हुए होते हैं। वह चार पैरों से चलता है। हर पैर में पाँच झिल्लीदार अँगुलियाँ होती है। अँगुलियों में बहुत बड़े नाखून होते हैं। वह मेढकों के समान जल तथा स्थलचारी जीव है, जो लाखों वर्षों से इस तरह रहता चला आ रहा है।

वैज्ञानिकों ने टुआटोरा में तीसरी आँख के भी चिह्न पाये हैं, जो इसके सिर के बीचो बीच होती थीं। उनका कथन है कि प्राचीन काल में यह जीव तीन नेत्रों से देखा करता था, परन्तु प्रकृति ने इसके तीसरे नेत्र को धीरे-धीरे बन्द कर दिया। इस विषय में आधुनिक जन्तु वैज्ञानिक बड़ी छानबीन कर रहे हैं। अब तो टुआटोरा अपनी जाति का अकेला ही प्रतिनिधि बचा हुआ है, परन्तु वैज्ञानिकों का कहना है कि यह उन सैकड़ों-हजारों सर्पों का पूर्वज है जो आज हमें देखने को मिलते हैं। सम्भव है छिपकलियों की प्राय: सभी जातियों का विकास इसी 'टुआटोरा' से हुआ हो। रेगिस्तान के बालू और पहाड़ों की चट्टानों में रहने वाली छिपकलियों से लेकर लंगूर-जैसी पूंछ वाली पेड़ों पर रहने वाली छिपकलियों और उनके पूर्वजों की समानता और विभिन्नता का अनुमान तो लगाइये। फिर उन छिपकलियों का विचार कीजिये, जो हमारे घरों की छतों और दीवारों पर रेंगती फिरती हैं तथा जो पानी में रहती हैं या जो चिड़ियों की भाँति पेड़ों की डालियों में उड़ती फिरती हैं। और तब इन सबकी तुलना उन बिना पैर वाली छिपकलियों से कीजिये जो साँप की भाँति रेंगती रहती हैं। तब कहीं आप कल्पना के आधार पर अपने घर की दीवारों और छतों पर रेंगने वाली छिपकलियों के पूर्वजों के दर्शन कर सकेंगे।

डाइनो सोरिया :

प्राचीन काल के टुआटोरा जाति के फॉसिल के साथ

उसी युग के इन विशालकाय सर्पों के भी चिह्न मिले हैं। इनके फॉसिल यूरोप, एशिया, दक्षिणी अफ्रीका, मैडागास्कर, उत्तरी तथा दक्षिणी अमेरिका और आस्ट्रेलिया में पाये गये हैं। इनको देखने से मालूम होता है कि ये भी जल तथा स्थलचारी जीव थे। इन जीवों की पूँछ बड़ी लम्बी थी और उनके तैरने में बड़ी सहायक होती थीं। शायद इनमें से बहुत से दलदल तथा स्थल में भी रहते होंगे। इनका डील-डौल असाधारण था, परन्तु सिर छोटा। इनकी बहुत-सी उपजातियाँ भी थीं जिनमें से एटलान्टोसोरस, इगुवानुडान तथा स्टेगोसोरस मुख्य हैं। वैज्ञानिकों का ऐसा कहना है कि एटलान्टोसोरस सर्पों का शरीर प्राय: 15 फुट लम्बा था। इनकी गर्दन अधिक लम्बी और मोटी होती थी। परन्तु इनका सिर इनके शरीर के अन्य भागों के अनुपात से बहुत छोटा होता था। इनकी पूँछ इनकी गर्दन से भी लम्बी होती थी और चारों पैरों के पंजे हाथी के पैरों की तरह गद्देदार होते थे। इसी कारण ये शीघ्रता से चल नहीं सकते थे। ऐटलान्टोसोरस के कुछ साथी 60 फुट तक भी लम्बे थे और गाय-बैल के समान घास-फूस खाकर रहते थे।

दूसरी जातिवाले जीव, इगुवानुडान प्रथम जाति वालों से छोटे होते थे। इनका सिर कुछ बड़ा और पिछले पैर आगे के पैरों से बड़े तथा मजबूत होते थे। आगे के पैर छोटे-छोटे थे तथा इनकी सहायता से ये पिछले पैरों के बल कूद भी सकते थे। उनकी अंगुलियाँ फैली हुई थीं। इनकी सहायता से वे वृक्षों के तनों को

पकड़कर खड़े रह सकते थे। इनकी पूँछ मोटी और छोटी होती थी। ये भी घास-फूस पर निर्भर रहते थे।

स्टेगोसोरस अत्यन्त विचित्र जीव थे। इनकी पीठ खालों से ढकी रहती थी, बेढंगी आकार की बड़ी-बड़ी असमान अस्थियों के रूप में ऊपर उठी रहती थी। वे प्राय: 28 फुट लम्बे होते थे, परन्तु इनकी गर्दन और आगे के पैर पहली जाति वाले दानव सर्पों से छोटे होते थे। इनका सिर तो बहुत ही छोटा था—इतना छोटा कि दूर से देखने में तो उसका भान ही न होता। आज के हाथी की आँखें उसकी डीलडौल के अनुपात में जैसे छोटी होती हैं उसी प्रकार उस युग के स्टेगोसोरस सर्पों का सिर बहुत छोटा होता था। आप कल्पना कर सकते हैं कि इतने छोटे मस्तिष्क में कितनी बुद्धि रही होगी। ये जीव भी घास खाया करते थे।

टेरासोरिया :

उड़ने वाले सर्पों के फॉसिल इंगलैंड तथा संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में मिले हैं। मालूम होता है कि सर्पों ने उड़ने के लिये बहुत प्रयत्न किया था और ये उड़ने में सफल भी हो गये थे। इसीलिये तो बाहरी बनावट में इनके शरीर चिड़ियों के अंग-प्रत्यंगों से बहुत कुछ मिलते-जुलते थे। फिर भी इनकी एक विचित्रता यह थी कि इनके पंख नहीं होते थे और इनकी हड्डियों का आकार चिड़ियों की अस्थियों से भिन्न था।

ऊपर से देखने में इनका सिर चिड़ियों के सिर के समान

प्रतीत होता था, परन्तु इनके मुख में बड़े-बड़े दांत होते थे और चिड़ियों के समान चोंच नहीं होती थी। इनकी गर्दन काफी लम्बी थी। ये सभी पंखहीन थे। इसलिये उड़ नहीं सकते थे। इनके हाथों और पैरों की बनावट बड़ी अद्भुत थी। हाथ की चौथी अंगुली बहुत ज्यादा लम्बी थी जिसके सिरे से लेकर पिछले पंजों तक चमगादड़ों के पंखों की तरह की खाल पीठ की चमड़ी से जुड़ी होती थी। इसी चर्म की सहायता से ये थोड़ा-बहुत उड़ लेते थे। पूँछ भी इनकी बहुत लम्बी थी और सिरे की ओर चौड़ी होती चली गयी थी। इनके पिछले पैरों की खाल पूँछ से जुड़ी हुई थी, इसीलिये उड़ते समय यह पूँछ पतवार का काम करती थी।

जन्तु विशेषज्ञ इन फॉसिल सर्पों को चिड़ियों के पुरखे मानते हैं। यह हो सकता है कि ये सर्प कुछ चिड़ियों के विकास का कारण रहे हों, परन्तु यह कहना कि सम्पूर्ण चिड़ियों का वंश इन्हीं से निकला है, ठीक न होगा।

इक्वियो सोरिया :

ये सर्प बहुत बड़े आकार के होते थे और समुद्र में ही रहते थे। इनके फॉसिल इंगलैंड, कैलिफोर्निया तथा व्योमिंग (उत्तरी अमेरिका) की चट्टानों में मिलते हैं। इनके थोड़े से चिह्न यूरोप, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड तथा भारत में भी मिले हैं। इसमें से कुछ तो तीस या चालीस फुट भी लम्बे

होते थे। इनके सिर और नेत्र बहुत बड़े थे। परन्तु इनमें गर्दन का एक प्रकार से अभाव ही था। हाथ, पैर, पूँछ तथा पीठ के आकार में ये मछली से मिलते-जुलते थे और समुद्र में चल-फिर सकते थे। कुछ वैज्ञानिक इन्हें प्राचीन काल के समुद्र ह्वेल भी कहते हैं। परन्तु इनकी हड्डियों की बनावट से ऐसा विदित होता है कि ये सर्प परिवार के ही रहे होंगे। टुआटोरा के समान इनमें भी तीसरी आँख के चिह्न प्रतीत होते हैं। इनकी मादा सर्प बच्चे को जन्म देती थी। इसका प्रमाण कुछ ऐसे फॉसिलों से मिलता है, जिनके शरीर के अन्दर बड़े-बड़े बच्चों के चिह्न मिले हैं। संसार के विभिन्न देशों में इनके विस्तार से ऐसा विदित होता है कि ये सम्पूर्ण संसार में फैले हुए थे।

प्लीसियो सोरिया :

इस प्रकार के सर्प जल तथा स्थल में रहते थे, परन्तु ये किसी सूखी जगह जहाँ जल का सर्वथा अभाव हो, नहीं रह सकते थे। इनके फॉसिल यूरोप, उत्तरी तथा दक्षिणी अमेरिका, न्यूजीलैंड तथा भारत में मिले हैं। इनका बाहरी आकार बड़ा विचित्र था। मछली की तरह इनके दो जोड़े, चौड़े-चौड़े पतवार जैसे, हाथ-पैर होते थे, जिनकी सहायता से ये नदियों, तालाबों या समुद्रों में तैर सकते थे। इनकी पूँछ छोटी और चौड़ी होती थी। इसी जाति के कई जीव लम्बाई में चालीस फुट तक थे परन्तु सिर, गर्दन तथा हाथ-पैर की बनावट में ये मछली से बहुत भिन्न थे। इनकी गर्दन जिराफ की गर्दन की भाँति बहुत

लम्बी और पतली थी, परन्तु सिर बहुत छोटा होता था। गर्दन और सिर की भीतरी बनावट में ये जीव अन्य जीवित सर्पों से बहुत मिलते-जुलते थे। परन्तु इन्हें मत्स्य की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता है। इनके हाथ-पैरों में मनुष्य के हाथ-पैर के समान छोटी-छोटी बहुत-सी हड्डियाँ पायी जाती है। इससे मालूम होता है कि इस काल के पहले ये स्थल में रहा करते होंगे। परन्तु कुछ कारणवश ये स्थल छोड़कर जलवासी हो गए थे। ऐसे ही परि-स्थिति-परिवर्तन करने वाले जीवों का उदाहरण ह्वेल मछली है। वह स्तनपोषी होती है, परन्तु ऊपर से देखने में ऐसा प्रतीत होता है कि यह दानवाकार मछली ही है। यह मालूम नहीं कि किन परिस्थितियों के कारण वह धीरे-धीरे स्थल से जल में रहने लगी।

एनोमोडोनशिया :

अब हम ऐसे फॉसिल सर्पों का वर्णन करेंगे जिनका संबंध सर्पों तथा स्तनपोषी जीवों दोनों से है। ये जीव-विज्ञान की दृष्टि से बड़े महत्वपूर्ण हैं और बहुत से आधुनिक वैज्ञानिकों की यह धारणा है कि इन्हीं सर्पों से स्तनपोषी जीवों का विकास हुआ है।

ये सर्प स्थलचर थे और इनके फॉसिल इस समय भी यूरोप, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अफ्रीका तथा भारत में मिलते हैं। इनकी तीसरी आँख भी होती थी जिसके चिह्न इनके सिर की हड्डियों

[illegible] है । सिर, जबड़े और कूल्हे की हड्डियों में ये जीवित [illegible] बहुत मिलते-जुलते हैं । इनका संबंध छिपकली के आकार [illegible] गर्दनवाले प्लीसियो सोरिया से अधिक है परन्तु इन [illegible] में स्तनपोषी जीवों की विशेषताएँ भी मिलती है । इनके मुंह में मनुष्य के समान चारों प्रकार के दाँत हैं और गाल की हड्डी भी पायी गयी है । अगले और पिछले पैरों की बनावट स्तनधारी जीवों के पैरों के सदृश है और कूल्हे तथा कन्धे की हड्डियों की बनावट शेर या चीते की शरीर-रचना से बहुत कुछ मिलती-जुलती है ।

मालूम होता है कि ये फॉसिल सर्प दोनों श्रेणियों के जीवों की विशेषता रखते थे । इनमें किसी श्रेणी के जीवों की विशेषतायें अधिक न थीं, अधिकांश वैज्ञानिक इनको न तो सर्प की श्रेणी में ही रखते हैं और न स्तनपोषियों की श्रेणी में । जब तक इनके स्पष्ट फॉसिल नहीं मिलते, तब तक जीवधारियों के वंश-वृक्ष में इनके युग एवं स्थान के विषय में निश्चित रूप से कुछ कहना कठिन है । परन्तु इनकी विशेषताओं से यह तो निश्चित रूप से स्पष्ट है कि स्तनपोषी जीवों के पुरखे इन्हीं सर्पों के समान रहे होंगे ।

साँपों के प्रकार

प्रत्येक मनुष्य साँप को असाधारण दृष्टि से देखता है। यह जीव भी विशेष विचित्रताओं से युक्त है। इसका शिव तथा अशिव रूप संसार में श्रद्धा और भय का कारण बना है। कुछ साँप सुन्दर होते हैं और कुछ अत्यन्त भयानक मालूम पड़ते हैं। इसकी घूरती हुई आँखें, विचित्र चाल तथा प्रबल मार करने की शक्ति के कारण लोग इसको घृणा तथा भय की दृष्टि से देखते हैं। देहाती लोग तो साँप को यमराज का दूत कहकर पुकारते हैं और अन्ध-विश्वासी लोग इसकी पूजा करते हैं। वैज्ञानिक भी इसकी सुन्दरता तथा लहरदार वक्रगति को देखकर बिना प्रशंसा किये नहीं रह सकते। नाग साँप किस सुन्दर ढंग से अपने चिकने लम्बे शरीर को सिकोड़ लेता है और फिर धीरे-धीरे उसे फैलाकर पत्थरों के अन्दर चला जाता है। प्रकाश में साँप के वल्कल कितने सुन्दर प्रतीत होते हैं। किसी-किसी साँप का सुन्दर कान्तिमय चर्म नेत्रों को लालायित कर देता है।

जन साधारण की यह धारणा है कि संसार के सब साँप विषैले होते हैं। अभी तक संसार में लगभग 1800 जाति के साँप पाये गये हैं। इस बड़ी संख्या में से लगभग 1500 जाति के साँप

केवल भारतवर्ष में ही मिलते हैं, जिनमें से केवल 69 जाति के साँप विषैले होते हैं। संसार के कुल साँपों में से 300 जाति के साँप अधिक विषैले होते हैं। समुद्री साँप सबसे अधिक विषैला होता है।

सबसे बड़ा साँप 30 फुट लम्बा होता है। यह भारतवर्ष का अजगर साँप है। लोगों का विचार है कि साँप बहुत काल तक जीते हैं, परन्तु यह विचार भ्रमपूर्ण है। कोई भी साँप 25 वर्ष से अधिक नहीं जीवित रह सकता। समुद्री कछुये 100 वर्ष तक जीवित रहते देखे गये हैं। साँप गूँगे होते हैं और संपेरों की बीन उन पर कोई प्रभाव नहीं डाल सकती परन्तु पृथ्वी पर जोर मारने से साँप तुरन्त इधर-उधर भागने लगता है। सभी साँप आनन्द-पूर्वक जल में तैर सकते हैं। वे प्राय: सभी मांसाहारी होते हैं। साँप का शरीर गोल-गोल छल्लों के समान हड्डियों से बना हुआ होता है। इसीलिये ये शीघ्रता से भाग नहीं सकते और इनकी गति तीन मील प्रति घन्टे से अधिक नहीं होती। कुछ साँप अंडों के बजाय बच्चे देते हैं। गठिया रोग में साँप के विष का इंजेक्शन बड़ा उपयोगी सिद्ध होता है। विषैले साँप के बच्चे उतने ही विषैले होते हैं जितने उनके माँ-बाप। साँपों को नचाना भारतवर्ष तथा मिस्र में अब भी एक व्यवसाय है। इसके लिये किसी विशेष कौशल की आवश्यकता नहीं होती। नाचने की चतुराई साँप के पकड़ने के ऊपर होती है। भारतवर्ष के संपेरे रेतीले अजगर को

मोटी पूंछ में एक छेदकर उसमें दो आँखें बनाकर उसे दो मुंहा साँप के नाम से लोगों में आश्चर्य उत्पन्न करते हैं। वे यह भी कहा करते हैं कि दो मुँहा साँप छः महीने तक एक मुँह से खाता है और छः महीने दूसरे मुँह से।

विषदन्त :

विषैले साँपों के मुँह में दो या चार विषदंत होते हैं और एक विषग्रंथि होती है जिससे विष साँप के काटने के समय निकल कर विषदंत में चला जाता है। सर्पों के विकास का पूर्ण अध्ययन करने से मालूम हुआ है कि यह विषग्रंथि एक लार की थैली से धीरे-धीरे बन गयी है। साँप बंधन में पड़कर प्रायः खाना नहीं खाता। वह कई महीने तक भूखा भी रह सकता है और यह विचित्र बात है कि इस प्रकार न खाने से भी उसे किसी प्रकार की हानि नहीं होती। अमेरिका के एक चिड़ियाघर में एक अजगर ने लगभग एक वर्ष तक कुछ भी नहीं खाया था। अन्त में उसके रक्षक ने बलपूर्वक उसके मुँह में एक खरगोश और कुछ चूहे आदि डाल दिये थे। साधारणतया साँप अपने आखेट को समूचा निगल जाते हैं और कभी अपने से भी बड़े जीवों को खा जाते हैं जिसके कारण उनके खाने की नली और पेट एक गेंद सदृश्य हो जाते हैं। प्रकृति ने इन साँपों के जबड़े की हड्डियों को तन्तुओं द्वारा एक दूसरे से बाँध दिया है। ऊपर तथा नीचे के जबड़े भी इसी प्रकार से बँधे होते हैं। इन तन्तुओं की सहायता से दोनों जबड़े काफी दूर तक फैलाये जा सकते हैं।

पाचन-शक्ति :

साँप की पाचन शक्ति बहुत तेज होती है। इसके पेट के रस में हड्डियाँ, दाँत आदि कड़ी वस्तुएँ घुल जाती हैं। स्तनपायी जीवों के नाखून और जंगली जीवों के मुलायम बाल इस रस में नहीं घुल सकते।

आप यह पूछ सकते हैं कि जिस समय साँप का मुख आखेट से फूलकर गेंद के सदृश्य हो जाता है, उस समय यह साँस किस प्रकार लेता है। प्रकृति ने इस समस्या को बड़ी सरलता से हल कर दिया है। इस कठिन अवस्था में साँप के साँस लेने की नली का सिर तुरन्त निकल कर ओठों से बाहर चला जाता है और इस प्रकार से हवा का सीधा संबंध फेफड़ों से हो जाता है।

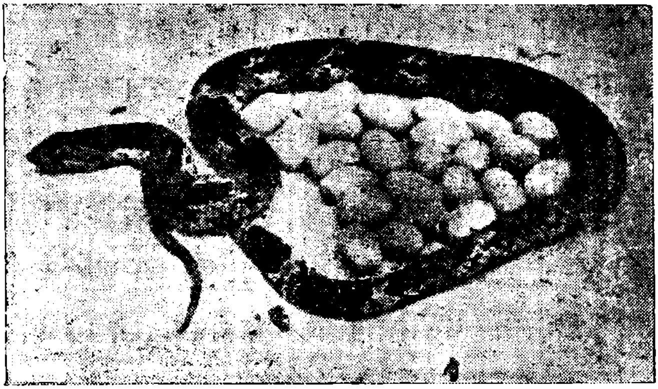

चित्र 1—साँप अपने अंडों के साथ

सभी साँप अंडों से निकलते हैं। कुछ साँपों में अंडे मादा के शरीर के अंदर बड़े होते हैं और फिर बच्चे बनकर बाहर निकलते हैं।

परन्तु अधिकांश साँपों की मादा अंडे देती है और इनमें से बच्चे अंडों को फोड़कर बाहर निकल आते हैं सब अंडों के ऊपर एक चिपचिपा रस होता है। इस रस के कारण एक दूसरे से चिपके रहते हैं।

अधिकांश साँप किसी बिल, रेत के नीचे या सड़ी हुई वस्तुओं के अन्दर अंडे देते हैं और अंडे धूप की गर्मी में पड़े रहते हैं। गर्मी अंडों के सेने में बहुत सहायता देती है। कुछ साँप अपने अंडे अपने गोलाकार शरीर के अन्दर रखकर सेते हैं। इस समय इन साँपों का तापमान वातावरण के तापमान से 10° ऊँचा रहता है। कुछ साँप एक बार में 100 से ऊपर अंडे देते हैं और कुछ केवल दो ही अंडे देते हैं। इसी प्रकार कुछ साँप 80 से अधिक बच्चे देते हैं और कुछ बहुत थोड़ी संख्या में।

यद्यपि साँप अधिकतर उष्ण प्रदेशों में रहते हैं। कुछ साँप शीतकाल के महीनों को छोड़कर वर्ष भर फुर्तीले रहते हैं। फिर भी शीतकाल में ये पृथ्वी के अंदर बिलों में घुस जाते हैं और कभी-कभी बहुत से साँप एक ही बिल में एक दूसरे के ऊपर चिपके हुए लेटे रहते हैं। इस दशा में वे अत्यन्त सुस्त तथा निद्रालु रहते हैं और कुछ खाते-पीते भी नहीं। इस अवस्था में इनमें पाचन-क्रिया और खून संचालन बहुत धीरे-धीरे होता है। तब ये भी अन्य सरीसृपों के समान अपने शरीर की उस चर्बी का शोषण किया करते हैं जिसको उन्होंने साल भर तक इकट्ठा किया था।

यह बड़े दुख की बात है कि भारतवर्ष में साँप काटने से प्रतिदिन लगभग 100 मनुष्यों की मृत्यु होती है। इतनी बड़ी मृत्यु संख्या सुनकर किसका हृदय भय तथा दुख से कांप न उठेगा ? हम लोग यदि कुछ नहीं कर सकते हैं, तो केवल विषधारी साँपों को मारने में ही सहायता दे सकते हैं। हम लोगों को देहात के लोगों को समझाना चाहिए कि वे नाग पूजना बंद कर दें, क्योंकि यह पूजा केवल अंधविश्वास का कारण है। इस विश्वास के कारण विष-धारी साँप बचकर भाग जाते हैं। अधिकांश भारतवासी नंगे पैर ही चलते-फिरते रहते हैं और ये ही लोग आसानी से साँपों के शिकार बन जाते हैं। अच्छी-से-अच्छी डाक्टरी या देशी चिकित्सा मिलने पर भी नाग तथा करैत के काटने से मनुष्य बच नहीं सकता। बचने का उपाय विष की तीक्ष्णता के ऊपर ही निर्भर करता है। यदि विष की मात्रा बहुत कम है या विष तेंज नहीं है या तुरन्त ऐन्टीविनीन के इंजेक्शन लग गये हैं, तो मनुष्य बच सकता है।

एक प्रमुख जीव-विज्ञानवेत्ता का कहना है कि इस समय साँप की संख्या अगणित है, परन्तु धीरे-धीरे कम होती जा रही है। मनुष्य से सब जीव डरते हैं और उसके आगे से भाग जाने का प्रयत्न करते हैं। इन्हीं वैज्ञानिकों का विचार है कि संभव है कि एक सहस्र वर्ष बाद सब साँप फॉसिल की अवस्था में परिणित हो जायं जिस प्रकार इस समय बड़े-बड़े समुद्री साँप फॉसिल की अवस्था में पाये जाते हैं।

विषधारी साँप :

डाक्टर सी० फिसैलिक्स तथा उनकी पत्नी फिसैलिक्स एक पत्रिका में इस प्रकार लिखते हैं :—यद्यपि सम्पूर्ण साँप दो बड़े भागों में विभाजित किये गये हैं (1) विषधर तथा (2) विषहीन। परन्तु हम दोनों ने कई वर्षों तक प्रत्येक साँप की ग्रंथियों तथा दांतों का बहुत अच्छी तरह अध्ययन किया है और अन्ततः इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि कोई भी साँप विषहीन नहीं है। वास्तव में ऐसा नहीं है विषधारी साँप वही होते हैं जिनके विष-दन्त होता है। यों तो घोड़े, बिल्ली आदि जीवों के काटने से भी मनुष्य की मृत्यु हो सकती है। अतः विषधारी साँप वे हैं जिनके विष ग्रंथियाँ होती हैं।

जैसा पहले कहा जा चुका है, भारतवर्ष में 1500 जाति के सर्प पाये जाते हैं। ये सब साँप 9 वंशों में विभाजित किये गये हैं इनमें से 29 जाति के समुद्री, 2 जाति के नाग, 7 जाति के कोरल साँप और 10 जाति के करैत साँप विषधारी हैं।

बाह्य आकृति से विषैले साँपों को पहचानना बड़ा कठिन हो जाता है। विष-दन्त का होना विषधर साँप की पहचान है। साँप को पकड़ने में निपुण संपेरे आपको मुँह खोलकर विष-दन्त दिखा सकते हैं। बहुधा साँप के सिर को देखकर भी एक अनुभवी व्यक्ति बता सकता है कि उसके विष-दन्त है या नहीं। विष-दन्त के विचार से विषैले साँप तीन भागों में विभाजित किये गये हैं।

पहले भाग के साँपों के विष-दन्त जबड़े के पीछे होते हैं, और शेष दोनों भागों के साँपों के विष-दन्त आगे होते हैं ।

साँपों में एक भाग के साँपों के विष-दन्त एक छोटी हिलने डुलने वाली हड्डी में लगे रहते हैं और तीसरे भाग के साँपों के विषैले दाँत बड़े होते हैं और जबड़े के अगले भाग में ही घुसे रहते हैं। पहले लोग प्रथम भाग के साँपों को विषहीन समझते थे, क्योंकि इनके विषैले दांत जीवों के शरीर में आसानी से नहीं लग पाते । परन्तु इन सभी के विष से मनुष्य की मृत्यु हो सकती है । सब साँपों के विष-दन्तों की आकृति एक प्रकार की नहीं होती । कुछ साँपों के विष-दंतों में नली होती है, कुछ में एक ओर नली होती है और थोड़े साँपों में इन दोनों के बीच में बनी होती है । विष-दंत समय-समय पर गिर पड़ते हैं और फिर से नये निकल आते हैं । इस प्रकार विषधर साँपों के विष से आसानी से छुटकारा नहीं पाया जा सकता ।

साँप का विष अर्ध-पारदर्शक होता है । उसका रंग हलका भूरा होता है । विष में कोई स्वाद नहीं होता, परन्तु नाग का विष मिर्च की तरह कड़वा होता है । विष खानेवाले इसे एक पुष्टिकर वस्तु बतलाते हैं और कहते हैं कि इससे पाचनशक्ति प्राप्त होती है । यदि किसी के गले, मुँह या पेट में कोई खरोच हो, तो उसे विष हानिकारक होगा और कभी-कभी प्राणघातक भी हो जायेगा । प्रत्येक विषैले साँप की थैली में थोड़ा विष रहता है ।

जब साँप तीन-चार बार एक साथ काटता है, तब विष का प्रभाव मनुष्य के शरीर पर कुछ भी नहीं हो सकता। विष की थैली जब खाली हो जाती है, तब उसके भरने में काफी समय लगता है। इस बीच में विष का प्रभाव कम हो जाता है। बाहर निकाले हुए विष का प्रभाव अधिक समय तक रहता है। इसको सुखाकर बोतल में बहुत वर्षों तक रखा जा सकता है, परन्तु पानी में घुला हुआ विष शीघ्र खराब हो जाता है।

विभिन्न प्रकार के साँपों के काटने के लक्षण जानना सब लोगों के लिये आवश्यक है। प्रत्येक साँप के काटने के लक्षण भिन्न-भिन्न होते हैं। नाग के दंश प्रभाव दबोइया के दंशन से भिन्न होता है। नाग के काटने पर विष के लक्षण दस मिनट से दो घन्टे के भीतर प्रकट होते हैं। यह विष की मात्रा तथा काटने के ढंग पर निर्भर करता है। कटे हुए स्थान पर धीरे-धीरे पीड़ा, जलन तथा सनसनाहट बढ़ने लगती है और वह थोड़े समय के पश्चात् सुन्न हो जाता है। इस स्थान पर सूजन आ जाती है और वहाँ से भूरे रंग का रक्त भी निकलने लगता है। सारा शरीर कमजोर तथा ढीला होता जाता है और रोगी के बोलने की शक्ति कम होती जाती है। उसके मुँह से फेन निकलने लगता है। इस कमजोरी से रोगी के श्वाँस की चाल भी धीमी पड़ जाती है और अन्त में वह इस संसार से विदा हो जाता है। साधारणतया नाग के दंशन से मनुष्य की मृत्यु पाँच से बारह घंटे के अन्दर हो जाती है।

रसल्स वाइपर या दबोइया के काटने से नाग के दंशन के समान सूजन आ जाती है और पीड़ा तथा टीस भी अधिक होती है। परन्तु रोगी बड़ी शीघ्रता से शिथिल होता जाता है। हाँ

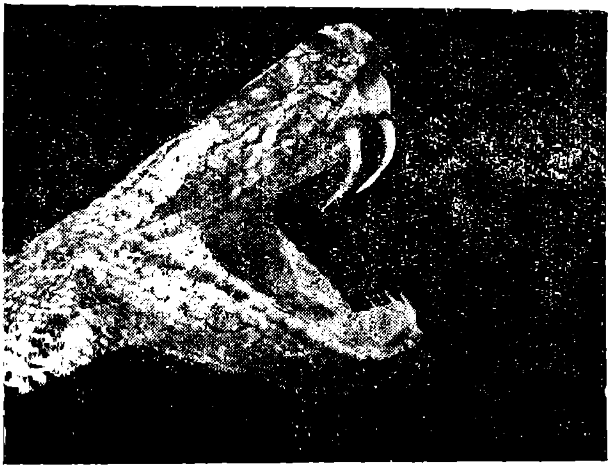

चित्र 2—साँप के विषैले दाँत

उसके हाथ-पैर सुन्न नहीं पड़ते। इस सर्प के काटने से हृदय की गति के रुकने का भी अन्देशा होता है। ठंडा पसीना अधिक आता है और कभी-कभी उलटी भी होने लगती है और घाव में मवाद आ जाता है। खाल के नीचे किसी-किसी रोगी में खून और पानी भर जाता है। इस प्रकार मनुष्य की मृत्यु बड़ी बुरी दशा में होती है।

करैत साँप दंशन के लक्षण नाग से मिलते-जुलते हैं परन्तु इसकी यह विशेषता है कि करैत के काटने से पेट तथा पेड़ू में बहुत दर्द होता है।

समुद्री साँप के लक्षण नाग के समान होते हैं। परन्तु ये सब लक्षण बहुत धीरे-धीरे प्रकट होते हैं, क्योंकि समुद्री साँप एक बार में बहुत थोड़ा विष उगलता है।

यहाँ पर यह ध्यान में रखना चाहिए कि लोगों को प्राय: विषहीन साँप काटते हैं और मनुष्य की मृत्यु केवल भय के कारण हो जाती है।

साँप के काटने के समय घाव के ऊपर शीघ्र ही कसकर एक पट्टी बांध देना चाहिए जिससे विष रक्त की नाड़ियों में न प्रवेश कर सके और एक छोटी लकड़ी पट्टी के अन्दर डालकर घाव के दूसरी ओर घुमाना चाहिए जिससे विष का फैलाव बंद हो जाय। अब घाव को एक तेज चाकू से काट देना चाहिए, ताकि रक्त के साथ-साथ विष भी धीरे-धीरे बाहर बह जाय। यदि साँप ने उंगली या अंगूठे में काटा है, तो उसको तुरन्त चाकू से काट देना चाहिए। यदि घाव मांस-पेशियों के पास हो, तो घाव के अन्दर गर्म लोहे की छड़ या तेज तेजाब रख देना चाहिए। ये उपचार यद्यपि बड़े कठोर हैं फिर भी मनुष्य का जीवन बचाने के लिए इन सब कठोर चिकित्साओं की शरण लेनी पड़ती है। एक साधारण चिकित्सा यह है कि रोगी को खूब शराब पिलानी चाहिए—यहाँ तक की वह अचेत होकर लेट जाता है, परन्तु यह आश्चर्य की बात है कि तीन-चार बोतल शराब पीकर भी साँप का काटा हुआ रोगी बेहोस नहीं होता। आस्ट्रेलिया के

एक विषैले साँप से काटी हुई 14 वर्ष की लड़की ब्रांडी की तीन बोतल पी जाने के बाद भी बेहोश नहीं हुई थी, यद्यपि केवल एक छटांक ब्रांडी उसे बेहोश करने के लिये पर्याप्त थी। बहुत मनुष्यों को शराब पिलाने से अत्यन्त लाभ हुआ है।

पुराने समय में लोगों का यह विचार था कि मनुष्य की लार से दबोइया साँप मर सकता है। ऐसा कहा जाता है कि होटेनटोट जाति के लोगों के थूकने से विषधर की मृत्यु हो गई थी। अभी तक किसी ने ऐसो कहानियों का समर्थन नहीं किया है। हो सकता है कि जंगलों के निवासी कोई जड़ी-बूटी या तम्बाकू चबा-कर साँप के ऊपर थूँक दिया करते हो जिसके कारण साँप की मृत्यु हो गई हो। प्राचीन काल से ऐसी प्रथा है कि जो लोग साँप से भरे हुए जंगलों में काम करते हैं, वे या तो विष की थोड़ी मात्रा अपने शरीर में प्रवेश करवा लेते हैं या थोड़ा विष खा जाते हैं जिससे साँप के काटने से उन पर विष का कोई प्रभाव न हो। 1813 ई० में कैम्पबैल साहब ने लिखा था कि होटेनटोट जाति के लोग विषधर को पकड़कर उसका विष निकालते हैं और उसे पी जाते हैं। टामस साहब ने 1896 ई० में लिखा था कि अफ्रीका के सिआली, इटली के मारसी, भारत के गौनी तथा प्राचीन आदि-वासी जातियों के लोग विष से मुक्त हैं और यह मुक्ति उन लोगों के रक्त में साँप के विष के रहने के कारण है।

डुमोंड हे ने सन् 1844 में संपेरों की एक जाति का अत्यन्त

रोचक वर्णन किया था कि ईसोवरी जाति के संपेरे अपने शरीर को जानबूझ कर विषैले साँपों से इस प्रकार कटवाते हैं कि उनपर कोई विष का बुरा प्रभाव नहीं पड़ता और धीरे-धीरे वे साँप के विष के प्रभाव से मुक्त हो जाते हैं। इस जाति की स्थापना करने वाला सीडना ईजर था, जो किसी समय रेगिस्तान में बहुत से अनुयायियों के साथ जा रहा था। कुछ समय बाद उसके सभी साथियों को भूख लगी और वे खाने के लिये चिल्लाने लगे। यह सुनकर सीडना ईजर पीछे घूमा और अरबी के 'कूल सिम' शब्दों में उसने उनको शाप दिया जिसका अर्थ था विष खाओ। लोगों को अपने प्रधान के ऊपर इतना विश्वास था कि उस दिन से उन्होंने विषैले साँपों को खाना प्रारंभ कर दिया, जिसके कारण आज उनकी संतान साँप के प्रभाव से मुक्त है। कहते हैं कि कुछ प्रदेशों के निवासी विषाक्त साँपों को मारकर और तुरन्त विष निकालकर अपने मुँह में डाल लेते हैं और पी जाते हैं। इस प्रकार के उपचार से वे विष के प्रभाव से बिल्कुल मुक्त हो जाते हैं।

[illegible] साहब ने कोलम्बो की एक पत्रिका में लिखा था—1854 ई० [illegible] में एक संपेरा मेरे बंगले में आया और अपने साँपों का खेल दिखाने के लिये आग्रह करने लगा। मैंने तो साँपों को पहले बहुत बार देखा था, इसलिए मुझे देखने की कोई इच्छा न थी। मैंने उससे एक नाग पकड़ने के लिये कहा जो दूर जंगल में एक [illegible] [illegible] रहता था। मैंने कहा, यदि तुम नाग को पकड़ लो, तो

मैं तुम्हें एक रुपया दूँगा। वह राजी हो गया। परन्तु चलने के पहले मैंने उसके सब साँप गिनकर रख दिये और उसके कपड़ों को भली-भाँति देख लिया जिससे वह अपने साथ कोई साँप न ले जा सके। जब हम लोग उस स्थान पर पहुँचे, तो देखा कि वह संपेरा बीन बजाने लगा और थोड़े समय के पश्चात् एक बड़ा नाग चींटियों के बिल से निकला और उस आदमी को देखकर भागने लगा। परन्तु उसने उसकी पूँछ पकड़ ली और उलटा घुमाते हुए उसे मेरे बंगले में ले आया। यहाँ पर उसने उसे नचाया, परन्तु उसी समय उसने उस संपेरे के घुटने में काट लिया। संपेरे ने तुरन्त घुटने के ऊपर कसकर पट्टी बांधा और घाव के ऊपर अपनी सर्पमणि रख दी। थोड़ी देर तक तो दर्द बहुत होता रहा, परन्तु फिर वह बिल्कुल कम हो गया और मणि भी गिर पड़ी। ठीक होने पर उसने साँप के सामने एक कपड़ा फैलाया। इसे पकड़ने के लिये साँप दौड़ा और विष-दन्त द्वारा उसको पकड़ लिया। इस दशा में संपेरे ने पीछे से उसकी गर्दन पकड़ ली और उसके विष-दंत निकालकर मुझे दे दिये। फिर विष को एक पत्ती के ऊपर निचोड़ दिया जिसके मलने पर फेन निकला। इस विष को निकालते समय तीन और आदमी वहाँ उपस्थित थे।

आजकल साँप के काटे हुए रोगी का विष दूर करने और उसे अच्छा करने की कई नई क्रियायें निकाली गयी हैं। रोगी के रक्त में ऐंटी-विनीन के इंजेक्शन दिये जाते हैं। अभाग्य-

परण सब विषधर साँपों का विष एक ही प्रकार का नहीं होता तथा विषनाशक रस प्रत्येक जाति के साँप के विष के लिये अलग-अलग होता है। जैसे नाग के विष का सिरप नाग से काटे हुए लोगों को अच्छा कर सकता है। अब एक कठिनाई यह है कि काटने के समय साँप की जाति का पता लगाना अत्यन्त कठिन होता है। भारतवर्ष में विषधर साँपों (नाग और दबोइया) से प्रति वर्ष लगभग बीस हजार मनुष्यों की मृत्यु होती है। बम्बई के पास्तूर इंस्टीट्यूट में विष का सिरप बनाया जाता है और नाग और दबोइया साँप का सिरप एक प्रकार का होता है। सिरप बनाने की विधि इस प्रकार है कि खरगोश, घोड़ा या दूसरे जानवरों के रक्त में विष का इंजेक्शन दिया जाता है। प्रत्येक दिन थोड़ा-थोड़ा विष रक्त में प्रवेश कराया जाता है। कुछ महीनों के पश्चात् विष का प्रभाव इन जानवरों पर बिल्कुल नहीं रह जाता। इसके बाद इन जानवरों का खून निकाल लिया जाता है। रक्त जम जाने पर पानी रह जाता है जिसको सिरप कहते हैं। इसको एन्टी-बिनीन भी कहते हैं। इस सिरप को शीशे की छोटी-छोटी नलियों में भरकर बन्द कर देते हैं। साथ ही साथ इन नलियों को वायु-रहित भी कर देते हैं। ये नलियाँ नगरों और गाँवों में भेजी जाती हैं।

विषैले साँपों को पकड़कर एक सुरक्षित स्थान पर रखा जाता है और प्रत्येक साँप के मुँह से थोड़ी मात्रा में विष निकलता

है। साँप के विष के निकालने की विधि अत्यन्त विषम है। साहसी तथा शान्त पुरुष ही इस काम को कर सकते हैं। इंस्टीट्यूट के कर्मचारी सबसे पहले साँप के शरीर को एक बनी हुई डंडी से दबाते हैं जिसके कारण वह हिल-डुल नहीं सकता। इसके पश्चात् वह अंगूठे और उँगलियों से उसका सिर पकड़ लेता है और उसको ऊपर उठाकर एक चमड़े या एक प्रकार के कपड़े से ढके हुए कांच के बर्तन में रख देता है। साँप को इस कपड़े के ऊपर कटवाते हैं उसके दांत कपड़े में घुस जाते हैं और विष बर्तन में गिर पड़ता है। इस विष को सुखाया जाता है और बंद करके कसौली अस्पताल भेज दिया जाता है। यहाँ पर विष को पानी में घोलकर घोड़े, खरगोश आदि जीवों के रक्त में इन्जेक्शन दिया जाता है। यह सिरप अमेरिका के थिरैसी इन्स्टीट्यूट में भी बनाया जाता है।

उत्तर पूर्वी अमरीका, मैक्सिको और मध्य अमरीका का हारलीक्यून कोरल साँप अत्यन्त विषैला होता है। यह दो फुट लम्बा होता है और इसके शरीर पर काली धारियाँ और लाल धब्बे होते हैं। इसके काटने की क्रिया विचित्र होती है। यह साँप बड़े आराम से धीरे-धीरे आगे बढ़ता है और शत्रु के मांस में अपने जबड़े बहुत जोरों से गड़ा देता है और बहुत देर के बाद छोड़ता है।

नाग की जातियाँ :

नाग साँप की आठ जातियाँ होती हैं और ये एशिया और

अफ्रीका में बहुतायत से पाये जाते हैं। भारतीय नाग के फन में एक या दो गोल चिह्न होते हैं। इनको बंगाल में गुखुरा और गोखिआ कहते हैं। हिन्दू लोग नाग को कभी नहीं मारते और कहीं कहीं पर उसकी पूजा भी होती है। इन चिह्नों को हिन्दू

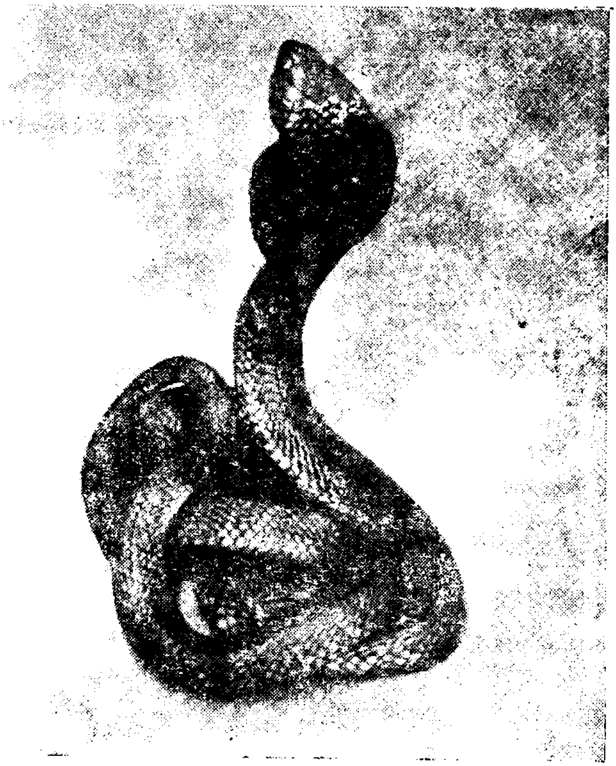

चित्र 3—मित्र देशी नाग

श्रीकृष्ण भगवान के पैरों के चिह्न समझते हैं। अब ऐसा अंधविश्वास धीरे-धीरे हटता जा रहा है। कोई-कोई नाग 7 फुट की लंबाई तक का पाया जाता है। लोगों की धारणा है कि पुराने

नाग के मुँह में एक मणि होती है जिसको वह रात में बा
निकालकर छोटे-छोटे जीवों को अपनी ओर खींचता रहता है अ
उन जीव-जन्तुओं को खा जाता है। परन्तु ऐसी कहानियाँ बिल्
निर्मूल हैं। नागराज अत्यन्त भयानक साँप होता है। इस
लम्बाई 15 फुट तक होती है और यह भारत, बरमा, मला
स्याम तथा दक्षिणी चीन में पाया जाता है। यह साँप मांसाह
भी है। अफ्रीका के नाग थूकने वाले साँप के नाम से प्रसिद्ध है
ये साँप अपने मुँह से विष को एक पतली धार में फेंकते हैं। ऐ
साँप दूर से अत्यन्त डरावना मालूम होता है। थूकने वाला स
निकट आते हुए आदमी की आँख में ही अपना विष फेंक
है। यदि वह मनुष्य की आँख में पड़ गया, तो आँख शीघ्र

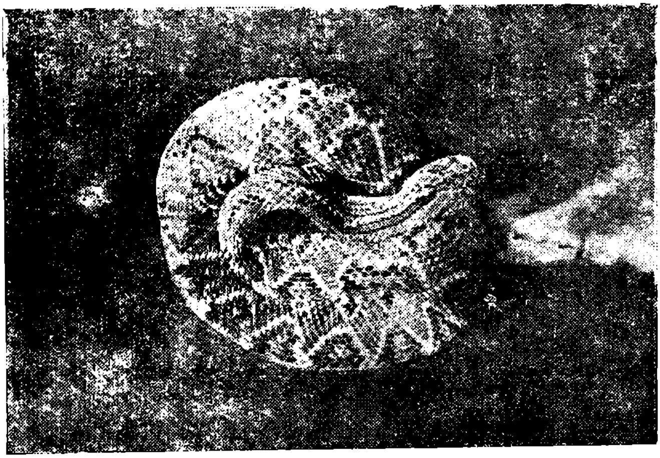

चित्र 4 —दक्षिणी अमरीकी रेटल साँप

फूट जाती है। यह साँप अपना विष तीन गज तक फेंक सक

है। इस साँप के काटने से मनुष्य के प्राण नहीं बचते।

अमेरिका में एक प्रकार का साँप होता है जिसकी पूँछ पर घंटी के आकार के बकले होते हैं। इस साँप के चलने-फिरने से घंटी का शब्द उत्पन्न होता है। इस साँप को रैटल साँप कहते हैं। इसके विषय में बहुत सी कहानियाँ प्रसिद्ध हैं। प्राचीन काल में कोढ़ चिकित्सा रैटल साँप के विष से की जाती थी अब भी इसका विष होमियोपैथिक दवाइयों में प्रयोग में आता है। अमेरिका के आदि निवासी रैटल साँपों की पूँछ की माला बनाकर पहनते हैं और उसे कान में भी पहनते हैं। उनकी धारणा है कि इसकी पूँछ में रोग नाशक गुण होता है। यदि कहीं जाते समय कोई साँप इन लोगों का रास्ता काट जाय, तो ये लोग उस दिशा में जाना बड़ा अशुभ मानते हैं। वहाँ के कुछ लोग रैटल साँपों की पूजा भी करते हैं।

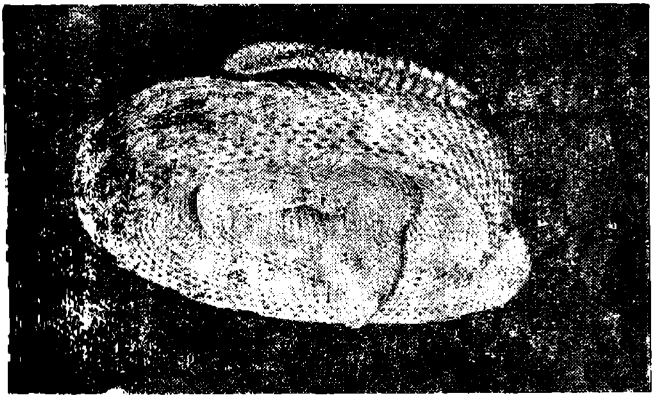

चित्र 5—भूरा रेटल साँप

[illegible] मुख्यतः संयुक्त राष्ट्र अमेरिका, मैक्सिको तथा पनामा

में मिलते हैं और 2 फुट से 8 फुट तक लम्बे होते हैं। इनका नाग या दबोइया के विष के समान तेज नहीं होता। रैटल अत्यन्त दब्बू होते हैं।

इसीलिये इन्हें साँप के पिंजड़े में अच्छी तरह नहीं रखा सकता। साधारणत: ये अपना खाना भी अपने आप नहीं ख इसलिए इन साँपों को बलपूर्वक खाना भी खिलाना पड़ता है

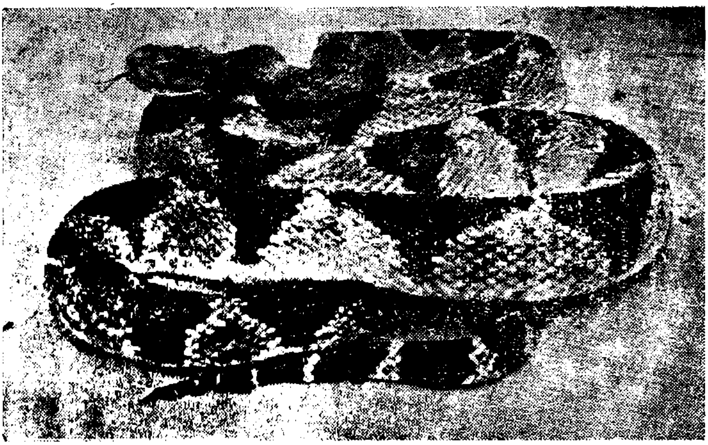

चित्र 6—झाड़ी का साँप

ट्रीनीदाद और दक्षिणी अमेरिका का बुशमास्टर साँप अत विषैला और भयानक होता है और यह ब्राजील और ब्रि गायना में 14 फुट तक लम्बा होता है। यह अधिकतर नम जंग और अन्य जीवों के बिलों में रहना पसन्द करता है। यह अ पाकर भागता भी नहीं। इसका विष प्राणघातक होता है। इस विष-ग्रन्थि से 350 मिलीग्राम विष निकाला गया है। इतना

किसी भी साँप की थैली में नहीं होता। दूर से देखने से यह साँप बड़ा सुन्दर और रंगीन मालूम पड़ता है, परन्तु इसे पकड़कर नहीं रखा जा सकता, क्योंकि बन्धन में आने पर यह खाना नहीं खाता।

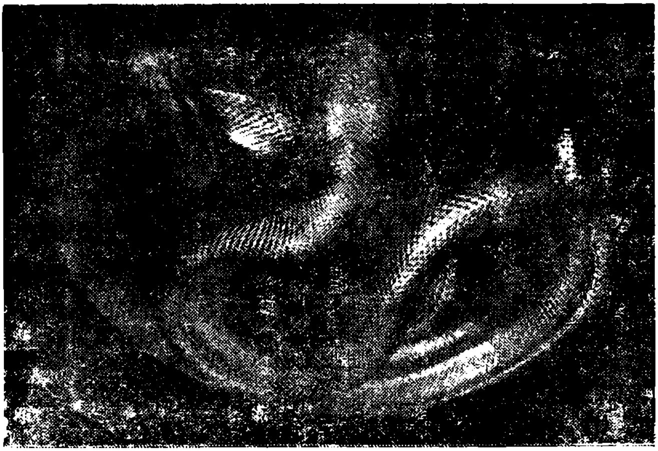

चित्र 7—रेत साँप

अफ्रीका का पफ ऐडर साँप भी बड़ा भयानक होता है। यह बड़ा विषैला होता है, इसका रूप और आकार सुन्दर नहीं होता है। इसका सिर तिकोना, चपटा बड़ा तथा शरीर मोटा होता है। इसकी लम्बाई 5 फुट होती है। यह रेगिस्तान तथा सूखे प्रदेशों में रहता है और अधिक समय तक बिल से केवल सिर निकाले रहता है। भयभीत होने पर शरीर को हवा से फुलाकर जोर से फुफकारता है। इस साँप के काटने से घोड़े तक दो घंटे में मर जाते हैं। लीडेकर साहब का कहना है कि मानव की

जंगली जातियाँ अपने तीरों की नोकों को इस विष से बुझाती हैं। इन तीरों से ये लोग जीवों को आसानी से मार सकते हैं।

अफ्रीका विषधर साँपों का घर है। इस महाद्वीप के विषुवत् रेखीय प्रदेश घने जंगलों से भरे हुए हैं, जहाँ केवल अन्धकार ही छाया रहता है। इन्हीं सघन वनों में विषैले साँप डालियों से लिपटे हुए झूलते रहते हैं। पूर्वी और पश्चिमी अफ्रीका में और दो तरह के साँप पाये जाते हैं। इनका बाह्य आकार पफ ऐडर से बहुत कुछ मिलता-जुलता है, परन्तु इनका शरीर चमकते हुए कई रंगों के लकीरों तथा चित्रों से सुसज्जित रहता है। ये देखने में बहुत अच्छे प्रतीत होते हैं। लंदन की पशुशाला में 15 वर्ष पहले इन्हीं जाति का एक साँप अफ्रीका से भेजा गया था जिसकी लम्बाई 5 फुट और तौल 6 सेर थी इस जाति का इतना बड़ा साँप अभी तक नहीं मिला है।

दक्षिणी आस्ट्रिया, हंगरी तथा बालकर प्रदेशों में लम्बी नाव वाला दबोइया पाया जाता है तथा सहारा और उत्तरी अफ्रीका में सींगी दबोइया पाया जाता है। इन दोनों साँपों के सिर में उठे हुए सींग होते हैं। प्लाइनी साहब इन सींगी साँपों का इस प्रकार वर्णन करते हैं:—ये साँप बिल से सिर निकालकर अपने चारों सींगों को हिलाकर चिड़ियों को आकर्षित करते हैं। वास्तव में सींग दो ही होते हैं परन्तु, इन प्रदेशों के निवासी से ही के दो

कांटे निकालकर इन साँपों के सिर में लगा देते हैं और लोगों को चार सींग वाला दबोइया दिखाते हैं।

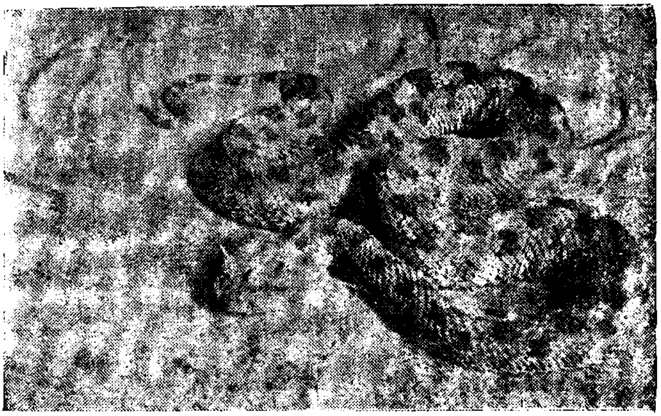

चित्र 8—सींग वाला वाइपर सांप

करैत का नाम आपने सुना होगा। यह नाग तथा दबोइया से भी अधिक विषैला होता है। करैत मुख्यतः भारतवर्ष में ही मिलता है। यहाँ अधिकतर नीले करैत और पट्टीदार करैत पाये

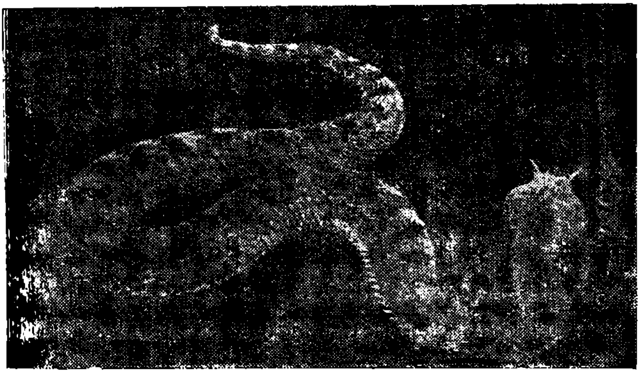

चित्र 9—रेगिस्तानी वाइपर सांप

जाते हैं । पट्टीदार करैत को संकनी भी कहते हैं । करैत घरों में रहना बहुत पसन्द करते हैं । परन्तु विषैले होते हुए भी ये सुस्त होते हैं और रास्ते से शीघ्रता से नहीं हटते हैं । जब कोई छेड़ता है, तब ये अपना सिर गोलाकार शरीर में उसी प्रकार छिपा लेते हैं जिस प्रकार भागता हुआ शुतुरमुर्ग बालू के अन्दर अपना सिर डाल देता है और अपने आप को सुरक्षित समझने लगता है ।

अजगर साँप :

इसके अन्तर्गत संसार के सबसे बड़े साँप आ जाते हैं । पानी में रहने वाला अजगर साँप 30 फुट तक लम्बा होता है । अजगर अपने शत्रु को शरीर में दबाकर पीस डालता है । किसी-किसी अजगर का शरीर मोटे मनुष्य की जांघ के बराबर होता है । इसकी मोटाई से अनुमान लगाया जा सकता है कि इसके शरीर में कितना बल होगा । हम लोगों की पौराणिक कथाओं में अजगर की शक्ति का वर्णन आया है । इसका एक उदाहरण दमयन्ती की कथा में मिलता है । जिस समय वह अकेली घोर जंगल से होकर अपने पिता के राज्य में जा रही थी, उसी समय एक अजगर साँप उसके शरीर के चारों ओर लिपट गया । वह साँप एक वृक्ष की डाली से लटक रहा था । भाग्यवश एक व्याधे ने दमयन्ती का रोना सुनकर अजगर के खुले हुए विशाल मुँह में एक तीर मारा, जिसके कारण वह वहीं गिरकर मर गया ।

मलाया का चितेदार अजगर लम्बा होता है । यह वर्मा तथा

दालचीन में भी मिलता है। पीले, काले और भूरे रंगों की जातियों से इसका शरीर सुसज्जित रहता है और सूर्य की किरणों के पड़ने पर इसके शरीर से अनेक रंग निकलते हुए प्रतीत होते हैं, जो बहुत सुन्दर दिखाई पड़ते हैं।

अजगर एक सर्वभक्षी साँप है। यह चिड़ियों सरीसृप तथा स्तनपायी जीवों (जंगली सुअर तक) को पकड़कर समूचा निगल जाता है। यह साँप जंगली आदमियों के बच्चों तक को खा जाता है। हट्टे-कट्टे आदमी तक को अपने शरीर से दबोच कर तीस फुट का अजगर चूर-चूर कर सकता है। चितेदार अजगर बंदीघर में अच्छी तरह रहता है, परन्तु कुछ अजगर सर्पों को बलपूर्वक खाना खिलाना पड़ता है। डिटमार साहब लिखते हैं कि न्यूयार्क की पशुशाला में एक अजगर को बलपूर्वक एक वर्ष तक खरगोश खिलाया गया था। एक डंडे के सिरे में 6 या 7 खरगोश बांधकर उसके गले में घुसेड़ दिये जाते थे। फिर वह डंडा निकाल लिया जाता था। एक वर्ष या दो वर्ष बाद वह अजगर अपने आप खाना खाने लगा था।

अजगर सुस्त और निद्रालु होते हैं और बड़े आराम से घूमते रहते हैं परन्तु भूख के समय यह फुर्तीले हो जाते हैं और बड़ी शीघ्रता से आगे-पीछे चलते-फिरते हैं और अपने आखेट को मिनटों में खा लेते हैं। वे एक छोटी बकरी और हिरन को भी निगल जाते हैं। कई वर्ष पहले लंदन की पशुशाला में एक बकरी

का बच्चा निगलते समय अजगर के जबड़े की हड्डी अपने स्थान से हट गयी थी, जिसके कारण वह खाना नहीं खा सकता था। जबड़े को हड्डी बैठाने के लिए डाक्टर बुलाये गये। कर्मचारियों ने उसके सिर को अच्छी तरह से पकड़ लिया और डाक्टर साहब ने उसकी हड्डियों को ठीक जगह पर बैठा दिया और मुँह में दवा लगाकर पट्टी बांध दी। थोड़ों देर बाद उस अजगर ने पट्टी को तोड़ डाला और इसके साथ दवा भी गिर गयी। डाक्टर ने फिर उसको चीरा और हड्डी को बैठाया। अबकी बार अजगर ठीक हो गया और धीरे-धीरे खाना खाने लगा।

भारतीय अजगर की लम्बाई 30 फुट से अधिक नहीं होती है। अजगर यह चीन में भी पाया गया है। यह कभी-कभी छिपकली

चित्र 10—भारतीय अजगर

या मगर के बच्चों को खा जाता है। अफ्रीका में अज़गर 24 फु

... अधिक लम्बे नहीं होते। इस देश के निवासी अजगरों को ...दिर के पास डाल देते हैं और उनकी पूजा भी करते हैं। ...मंड अजगर आस्ट्रेलिया और न्यू गायना में पाये जाते हैं। ये 8 फुट से अधिक लम्बे नहीं होते। इनके शरीर के प्रत्येक वक्कल के बीच में एक पीला चिह्न होता है।

एक प्रकार का अजगर बोबा कहलाता है। इसकी मादा बच्चे ...नी है। इस जाति का सबसे बड़ा जीव दक्षिणी अमेरिका का अनाकोडा ...ा जल बोबा है। इसका वर्णन आगे के पनिहर साँपों के साथ में किया गया है। अंग्रेजी के पौराणिक प्रकृति-विज्ञान के कोष में अजगरों का वर्णन इस प्रकार दिया हुआ है :—

"जिस काल में रोम एक प्रसिद्ध नगर था, वाग्रेदस के किनारे एक गुफा में एक विशाल जीव रहा करता था, जिसकी लम्बाई 125 फुट थी। रेगुलस की सेना और हथियार उस राक्षस का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकी। इसके विपरीत इस राक्षस ने सेना की कई टुकड़ियों को मार डाला और बड़ी-बड़ी तोपें भी उसका कुछ बिगाड़ न सकीं।"

एक भैंसे और बोबा अजगर की लड़ाई का वर्णन इस प्रकार दिया गया है :—

"बोबा का मांस दक्षिण अमेरिका के निवासी खाते भी हैं और उसकी चर्बी से अनेक रोगों को अच्छा करने के लिए मलहम बनाते हैं। परन्तु खाने में इसका मांस बहुत स्वादिष्ट नहीं होता है।"

विषधर साँप के विष के विकास के संबन्ध में बर्मा प्रदेश में एक कथा प्रसिद्ध है, जिसका मेसन साहब ने इस प्रकार वर्णन किया है :—

कथा के अनुसार पहले केवल अजगर के ही विष होता था और आधुनिक विषैले साँपों ने अपना विष उसी से लिया है। उस समय यह दूध के समान उज्जवल था। यह अजगर ईव नामक एक स्त्री को पकड़कर अपनी गुफा में ले गया। वहाँ उस औरत से कहा कि मेरे शरीर के ऊपर चित्र बनाओ। वही चित्र आजकल अजगर साँप के शरीर पर देखें जाते हैं। वह अजगर इतना विषैला था कि यदि सड़क पर बने हुए किसी मनुष्य के चरण चिह्न को काट लेता, तो वह मनुष्य चाहे जितनी दूर होता, तुरन्त मर जाता। उस अजगर ने अभी तक इस प्रकार मनुष्य को मरते हुए अपनी आँखों से नहीं देखा था, अतः एक कौवे से कहा जाओ देखो, इस चरण-चिह्न को काटने से कोई मनुष्य मरता है या नहीं। कौवा एक कोठरी के निकट गया। वहाँ जाकर उसने देखा कि लोग खूब नाच-नाचकर गा-बजा रहे हैं। वास्तव में उन आदि लोगों के यहाँ मृत्यु पर इसी प्रकार का गाना-बजाना हुआ करता था। कौवे ने अजगर से कहा कि रोने के स्थान पर सभी लोग आनन्द मना रहे हैं। यह सुनकर अजगर को बड़ा क्रोध आया। उसने एक वृक्ष पर चढ़कर अपना सम्पूर्ण विष थूक दिया। इस विष को अन्य सरीसृप जीवों ने खा लिया। इसी का परिणाम है कि उनके काटने से आज तक मनुष्य मर जाते हैं। वह वृक्ष

भी प्राणघातक हो गया, जिसके ऊपर से अजगर ने अपना विष थूका था। इसलिए उस वृक्ष का रस तीरों की नोकों को विषैला बनाने के लिए प्रयुक्त होने लगा। अजगर ने इसके पश्चात अन्य जीवों से यह वचन ले लिया कि जब तक कोई मनुष्य तुम्हें न छेड़े, काटना नहीं। इस पर नाग ने अजगर से कहा—यदि कोई मुझको इतना तंग करे कि मेरी आँख से एक दिन में सात बार आँसू गिरे, तो मैं उसको तुरन्त काटूँगा। इसी प्रकार चीते तथा अन्य दूसरे जीवों ने भी कहा। परन्तु पनिहा साँप तथा मेढक ने कहा कि जिसको वे चाहेंगे, उसी को काटेंगे। इस पर अजगर ने उन जीवों को पानी में डाल दिया, जिसके कारण उनका विष पानी में घुल गया और वे विषहीन हो गये।

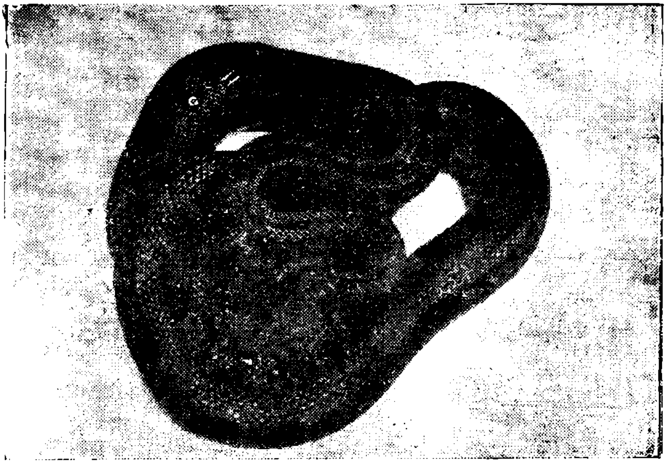

चित्र 11—डायमंड अजगर

ये सरीसृप बड़े-बड़े जीवों को निगल जाते हैं। प्राचीन

काल की पुस्तकों में इनके निगलने की शक्ति का अत्युक्तिपूर्ण वर्णन मिलता है । एक प्राचीन प्रकृति विज्ञान की पुस्तक के आधार पर यह कहा जाता है कि एक समय एक महान बोबा और भैंसे में युद्ध छिड़ा । बोबा बड़ी शीघ्रता से उस डरे हुए भैंसे के ऊपर टूट पड़ा और उसको चारों ओर से लपेट लिया जिससे उस भैंसे की सारी हड्डियाँ चूर-चूर हो गयी हैं ।

कहते हैं फिलीपाइन द्वीप समूह में एक अपराधी भय के कारण एक गुफा में छिप गया । यह गुफा केवल उसके पिता को ही मालूम थी । उसका पिता कभी-कभी उसके लिए कुछ चावल ले जाया करता था । परन्तु एक दिन उसने अपने पुत्र के स्थान पर एक महान बोबा को सोते हुए पाया । उसने उसको तुरन्त मार डाला और उस अजगर के उदर में उसने अपने पुत्र की लाश पायी ।

पौराणिक कथा :

भारतवासियों ने साँपों का इस प्रकार का अलौकिक वर्णन बहुत किया है । एक पौराणिक कथा इस प्रकार है कि जो साँप राजा परीक्षित को काटने के लिए जा रहा था, उसने रास्ते में एक ज्ञानी पंडित को अपने विष का प्रभाव दिखाने के लिए एक हरे-भरे वृक्ष को अपनी फुफकार से जला दिया था । इस प्रकार की अन्य कल्पित कथाएँ मिलती हैं, जिनके ऊपर आधुनिक वैज्ञानिकों का विश्वास तिल भर भी नहीं है ।

बिल में रहने वाले सर्प :

बहुत से साँप ऐसे भी हैं, जो अपने जीवन का अधिकांश भाग बिलों में ही व्यतीत करते हैं। केवल वर्षा ऋतु में वे कभी-कभी बाहर निकलते हैं। इनके रहन-सहन का ढंग बड़ा विचित्र होता है। इन साँपों का सिर धड़ से केचुए के सिर की भाँति लगा हुआ होता है। इसका शरीर छोटे-छोटे बकलों से ढका होता है और बकले सब एक प्रकार के होते हैं। साधारणतः दूसरे साँपों में पेट के बकले पीठ के बकलों से बड़े होते हैं।

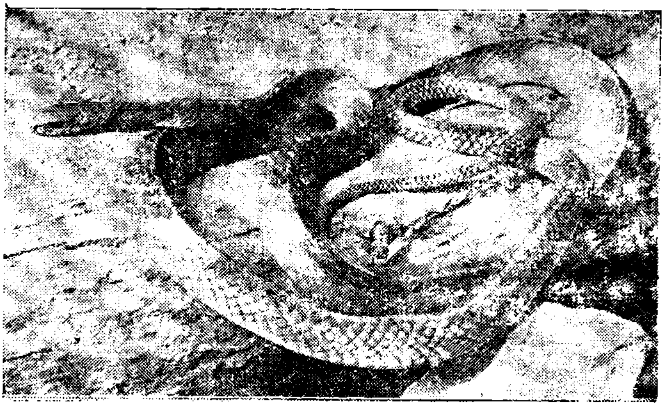

चित्र 12—चूहा खाने वाला बिल का साँप

बिल में रहने वाले साँपों के मुँह बहुत छोटे होते हैं, इसलिए वे अपना जबड़ा बहुत ज्यादा नहीं फैला सकते। अतः वे केवल छोटे-छोटे कीड़े-मकोड़ों पर अपना जीवन निर्वाह करते हैं। केंचुए, चींटी तथा कीट पतंगे ही इनके भक्ष्य हैं। इन साँपों में से बहुतों

को दिखाई नहीं देता, परन्तु वास्तव में वे अन्धे नहीं होते। उनकी आँखें बहुत छोटी होती हैं अथवा उन पर एक झिल्ली पड़ी होती है, जिसके कारण वे देख नहीं सकते। अंधे साँप छः इंच से ज्यादा लम्बे नहीं होते और उनके दाँत भी छोटे होते हैं। अधिकांश साँपों के नीचे के जबड़े में दाँत नहीं होते। कुछ ऐसे अंधे साँप होते हैं, जिनके ऊपर के जबड़े में दाँत नहीं होते। ये साँप उष्ण कटिबन्ध के प्रदेशों में अधिकता से पाये जाते हैं।

कैलाबरिआ—पश्चिमी अफ्रीका का बिल बनानेवाला साँप अत्यन्त विचित्र जीव है। इसको कैलाबरिआ के नाम से पुकारते हैं। यह साँप प्रायः तीन फुट लम्बा होता है। इसका रंग बादामी होता है, जिसके ऊपर पीले-पीले धब्बे होते हैं। दिन-भर यह साँप अपने बिल में आराम करता है, परन्तु सायंकाल को बाहर निकलता है और छोटे-छोटे चूहों को पकड़कर खाता है।

एक दूसरे प्रकार का साँप दक्षिणी भारत तथा लंका में मिलता है। इसको यहाँ के निवासी 'शील्ड-टेल्स' के नाम से पुकारते हैं। इसकी पूँछ की नोक में एक चौड़ा चपटा बकला होता है।

इरिक्स—दक्षिणी अमेरिका में गोल मूँगे के आकार का एक साँप पाया गया है। इसके शरीर पर लाल और काले रंग की धारियाँ बनी होती हैं। यह दूर से देखने में अत्यन्त विषैले कोरल साँप से मिलता-जुलता है जो उन्हीं स्थानों में पाये जाते हैं।

इस विचित्र समानता को मिमिकरी कहते हैं। ये साँप रेतीले प्रदेशों में रहते हैं। इरिक्स एक रेतीला साँप है, जो दक्षिण-पूर्वी यूरोप, उत्तरी तथा पूर्वी अफ्रीका और दक्षिणी तथा मध्य एशिया में मिलता है। इस साँप की सात जातियाँ हैं। इन सबकी आँखें छोटी तथा पूँछ छोटी तथा चपटी होती है। भारतीय इरिक्स सबसे बड़ा होता है जिसकी लम्बाई तीन फुट से अधिक नहीं होती।

ये सब साँप विषहीन होते हैं और भारत में संपेरे इनको दो-मुहाँ साँप के नाम से पुकारते हैं। संपेरे पूँछ के अन्त में एक छेद कर देते हैं। इसको ये लोग दूसरा मुँह कहते हैं और अनपढों को धोखा देते फिरते हैं।

इन विषहीन साँपों को ईश्वर ने शत्रु से बचने के लिए अनेक साधन दिए हैं। जब कोई शत्रु इन्हें पकड़ता है तब ये नाग साँप के समान अपना सिर ऊपर उठा लेते हैं और फुफकार मारते हैं। यदि इस क्रिया से ये सफल न हुए तो वे तुरन्त भूमि पर गिर पड़ते हैं और धीरे-धीरे चलने लगते हैं। उनकी चाल धीमी होती जाती और दूर से ऐसा प्रतीत होता है कि वे मर रहे हैं। अन्त में एकाएक वे उलट जाते हैं और पीठ के बल चुपचाप पड़े रहते हैं। अब शत्रु को विश्वास हो जाता है कि वे मर गये।

जल में रहने वाले सर्प :

पानी में तो सब साँप तैर सकते हैं, परन्तु कुछ ऐसे साँप हैं

जो पानी के अन्दर बहुत समय व्यतीत करते हैं। इन पनिहा साँपों में अनाकोंडा या पानी का अजगर सबसे विशाल होता है। ये साँप ब्राजील, पेरू तथा ग्याना के प्रदेशों में बहुतायत से मिलते हैं। इनके विषय में अनेक कल्पित कथाएँ प्रसिद्ध हैं।

हर्टिवग साहब का कहना है कि यह भयानक साँप घोड़े को उसके सवार के साथ ही निगल जाता है अथवा एक पूरे बैल को सींगों सहित खा जाता है। स्पेन के निवासी इसकी लम्बाई 80 फुट के लगभग बतलाते हैं और इसको 'मटाओरा' के नाम से पुकारते हैं जिसका अर्थ 'बैल-भक्षी' है।

अनकोंडा—परन्तु वास्तव में अनकोंडा 30 फुट से अधिक लम्बा नहीं होता। समुद्री साँपों को छोड़कर अनकोंडा बाकी पनिहा साँपों से अधिक पानी में रहना पसन्द करता है। अपना सिर पानी के ऊपर निकाल कर वह लेटा रहता है। कभी-कभी वह पानी में आराम से तैरता रहता है या किनारे के वृक्ष की डालियों में लिपट जाता है। इस दशा में यह शिकार की खोज में इधर-उधर देखता है और यदि इसी समय कोई प्यास से मारा हुआ अभागा जंगली सुअर उधर आ जाय तो वह उसका आखेट हो जाता है। परन्तु अनकोंडा अधिकतर चिड़ियों को ही खाता है। एक समय यह एक घड़ियाल तक को निगल गया था। कभी-कभी तो ऐसा भी देखा गया है कि मनुष्य भी इनका शिकार बन बैठा है। यही कारण है कि इसके आस-पास के रहने वाले मनुष्य बहुत डरते हैं और ऐसे स्थानों से दूर चले जाते हैं।

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि यह साँप विषहीन है और इसलिए अपने शिकार के शरीर के चारों ओर लिपटकर उसे पीस

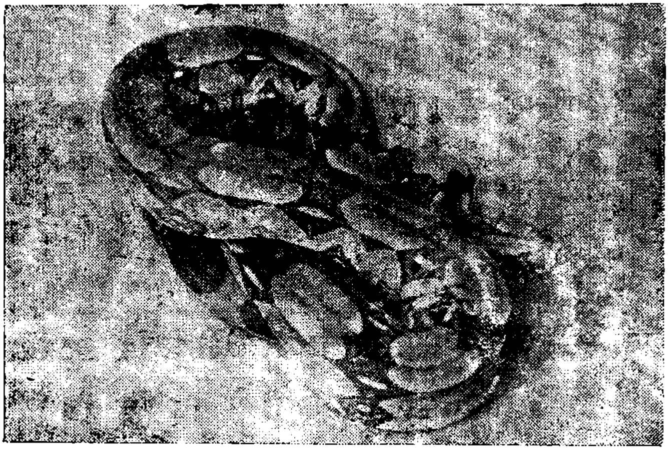

चित्र 13—दक्षिण अमरिकी साँप

डालता है। लंदन की पशुशाला में ऐसे जीव कभी-कभी ही देखने को मिलते हैं। इसी पशुशाला में 1913 ई० में एक मादा ने चार बच्चे दिए जिनमें से प्रत्येक की लम्बाई 3 फुट के बराबर थी।

वैसे तो बहुत से पनिहा साँप होते हैं, परन्तु इनमें से एक साँप सूँड़ के दृश होता है, इसीलिए इसको सूंड़ साँप के नाम से पुकारते हैं। यह जावा, न्यूगिनी, तथा मलाया के द्वीपों में अधिकता से मिलता है। स्याम देश के निवासी ढोल बनाने में इस साँप की खाल को काम में लाते हैं। पनिहा साँप में समुद्री साँप बहुत विषैला होता है। यह अधिकतर हिन्द तथा प्रशान्त महा-

सागरों के खारे पानी में पाया जाता है। डा० थिओडोर कानटोर ने इन साँपों के विष की तीव्रता के ऊपर कई प्रयोग किए हैं। इनके कथन के अनुसार इस साँप के काटने पर एक मुर्गी आठ मिनट के पश्चात्, एक मछली दस मिनट के पश्चात्, एक कछुआ बीस मिनट के बाद और एक विषहीन साँप आधे घंटे के पश्चात् अपने प्राण छोड़ देता है। सर जोजेफ फायर का कहना है कि एक मछुआ इसके काटने के 1½ घंटे बाद संसार से चल बसा। समुद्री साँपों के काटने का ढंग अत्यन्त भयानक होता है और पानी से निकलते ही पासवाली वस्तु को प्रचंड रूप से काटने लगते हैं। समुद्री साँपों की लम्बाई दो से दस फुट तक या उससे भी अधिक होती है। इनकी पूँछ पतवार के समान चौड़ी होती है। इनके नथुने सर के ऊपर होते हैं। प्रत्येक नथुना दो ढकनो से ढका रहता है और ज्योंही साँप पानी के अन्दर जाता है वैसे ही ये बन्द हो जाते हैं।

समुद्री साँपों की आँखें बहुत छोटी होती हैं और पानी के बाहर उनकी पुतलियाँ सिकुड़ जाती हैं। इन्हें तेज धूप के सामने यदि रक्खा जाय, तो ये तिलमिला जाते हैं। अधिकतर समुद्री साँपों के पेट पर अत्यन्त छोटे-छोटे बकले होते हैं। ये साँप अपनी केचुल एकदम नहीं गिराते। वह थोड़ी-थोड़ी निकलती रहती है।

इस जाति के सब साँप बच्चे देते हैं। मादा किसी चट्टान

के किनारे बच्चे देती है और उन बच्चों के चारों ओर मण्डली मारकर कुछ दिनों तक बैठी रहती है। इस प्रकार मादा छोटे बच्चों की रक्षा करती है। इन साँपों को जीवित पकड़ना बड़ा कठिन काम है।

पाश्चात्य देशों के मनुष्यों ने एक विशाल समुद्री साँप का वर्णन कई पुस्तकों में किया है। नार्वे देश की पौराणिक कथाओं के अनुसार संसार में एक अत्यन्त विशाल साँप है, जो पृथ्वी को चारों ओर से घेरे हुए है। एक पुस्तक में इस साँप का वर्णन इस प्रकार है—इसकी पीठ पानी के ऊपर ऐसी प्रतीत होती है जैसे समुद्र में बहुत से द्वीप छितराये हुए हैं। पीठ का घेरा $1\frac{1}{2}$ मील से अधिक होगा। कहीं-कहीं पर टीले दिखाई पड़ते हैं, जिनके ऊपर छोटी-छोटी मछलियाँ कूद रही हैं और फिर पानी में तैरती हुई प्रतीत होती हैं। पीछे की ओर सींग के समान उठी हुई कई नोके हैं। जिनका निकला हुआ भाग चौड़ा और मोटा है। ये छोटे-छोटे जहाज के मस्तूल के समान ऊँचे होते हैं। अतः यह प्रतीत होता है कि वे उस जीव के हाथ हैं। ऐसा कहा जाता है कि यदि वे किसी भी युद्ध पोत को पकड़ ले, तो तुरन्त ही उसको समुद्र के धरातल पर खींच लेंगे।

पादरी पोनटोपिडान दूसरे समुद्री साँप का वर्णन इस प्रकार करते हैं कि यह साँप 600 फुट लम्बा है, जो 1740 ई० में नार्वे देश के तट पर दिखाई पड़ा था। इस प्रकार के शेषनागों का

वर्णन कई विद्वानों ने किया है : परन्तु अभी तक जीव-विज्ञानवेत्ताओं ने ऐसा जीव नहीं पाया है। अधिकांश विद्वानों का मत है कि इस प्रकार का जीव केवल पुस्तकों में ही मिलता है।

सन् 1870 ई० में ओस्वर्न जहाज के कप्तान ने 3 जून को सिसली द्वीप के तट पर एक विशाल समुद्री जीव को देखा। दूर-बीन से कप्तान ने उस जीव का निरीक्षण किया और बतलाया कि इस जीव का सिर अत्यन्त विशाल है और पंख भी बहुत बड़े हैं। कप्तान के सहायकों ने भी इस जीव को देखा और बत-लाया कि इसके पंख 30 फुट लम्बे हैं और 5 से 6 फुट तक ऊँचे हैं। परन्तु किसी ने यह ठीक नहीं बतलाया कि यह कौनसा जीव है और किस प्रकार का है तथा किस जाति का है। हाल ही में पी० एच० गूज ने लिखा है कि समुद्र में एक अत्यन्त विशाल जीव अवश्य है जिसको अभी तक किसी ने नहीं देखा है और न पाया है। मेरा विश्वास है कि किसी-न-किसी दिन मनुष्य उसका पता लगा लेगा। मिस्टर ए० डी० बार्टलेट का भी यही विचार है।

वृक्ष पर रहने वाले साँप :

वृक्ष पर रहने वाले साँप बहुत प्रकार के होते हैं। ऐसे अधिकांश साँप वृक्षों की डालियों पर रहते हैं और नीचे कभी उतरते नहीं। इसके अन्तर्गत कुछ ऐसे भी साँप हैं, जो झाड़ियों तथा छोटे-छोटे पौधों के ऊपर विचरते हैं।

कोड़ेदार साँप—कोड़ेदार साँप एक विचित्र साँप होता है। यह अधिकतर दक्षिणी पूर्वी एशिया में मिलता है। इसका शरीर अत्यन्त पतला होता है और यह घास-फूंस में रेंगता रहता है। हरा कोड़ेदार साँप बहुतायत से मिलता है। यह हरी घास में पहचाना नहीं जा सकता। कुछ विद्वानों का विचार है कि यह सीधा सादा जीव है। परन्तु कुछ विद्वान इस विचार से सहमत नहीं हैं। उनका विचार है कि यह अत्यन्त भयानक जीव है।

चित्र 14—सिंग वाला वृक्ष साँप

जीव-विज्ञानवेत्ताओं ने इसी साँप को एक समय सीधा पाया और

दूसरे समय भयानक। उनकी राय यह है कि यह साँप समय-समय पर अपनी प्रकृति बदल सकता है।

एक समय बेरिज साहब ने एक संपेरे के पिटारे में से उससे पूंछकर एक ऐसे ही साँप को निकालकर एक झाड़ी पर रख दिया और उसका चित्र लेने के लिए अपना कैमरा ठीक किया। अभी तक तो साँप बहुत शांत था, परन्तु जैसे ही झाड़ी पर पहुँचा वैसे ही उसने अपना रूप भयानक बना लिया, और अपना मुँह खोल लिया। बेरिज साहब ने फोटो तो खींच लिया, परन्तु यह समस्या पैदा हुई कि किस प्रकार इसको पिटारे में रखा जाय। कोई भी इसको पकड़ न सका। उसके खुले हुए मुँह को देखकर सब लोग डर गए। अन्त में एक लकड़ी के डंडे की सहायता से उसे उठाकर पिटारे में रखा गया। अमेरिका का कोड़ेदार साँप अपनी पूँछ की सहायता से बहुत शीघ्रता से दौड़ता है। इसका शरीर बहुत पतला होता है।

लाउसन ने ऐसे साँप का एक अत्यन्त रोचक वर्णन दिया है। उनके कथनानुसार यह खेतों में पहुँचकर सब उपजनाशक-जन्तुवर्ग को खा डालता है। यह रैटल साँप तक की गर्दन पकड़ कर उसे घुमाता है और धीरे-धीरे उसे मार डालता है। यदि कोई इस साँप का पीछा करे, तो वह शीघ्रता से भागकर वृक्ष पर चढ़ जाता है और किसी बिल में अपना सिर घुसेड़ लेता है। इस दशा में कोई इसको खींचे तो इसका शरीर तुरन्त ही बीच से टूट जाता है।

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि कुछ साँप उड़ते भी हैं। दक्षिणी भारत तथा एशिया के अन्य उष्ण प्रदेशों में उड़ने वाले साँप पाए जाते हैं। ये साँप एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष की डालियों पर कूद जाते हैं। उड़ते समय ये अपना शरीर सीधा रखते हैं और पेट के भाग को थोड़ा सिकोड़ लेते हैं, जिस कारण उनका शरीर मेहराब के समान हो जाता है। ये तिरछे और नीचे की ओर उड़ते हैं। मेजर फ्लावर ने एक ऐसे साँप को एक मकान की ऊपरी खिड़की से एक वृक्ष की डाली तक कूदते हुए देखा। खिड़की से वृक्ष की डाली 8 फुट की दूरी पर थी।

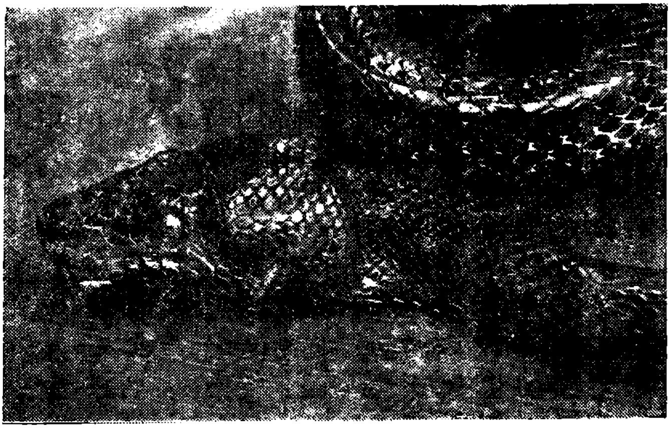

चित्र 15—वृक्ष साँप

उड़ते हुए साँप देखने में बहुत सुन्दर प्रतीत होते हैं। ये रंग बिरंगे होते हैं। इनका शरीर गहरे हरे रंग का होता है, जिसके ऊपर पीले, लाल या नारंगी रंग के चिह्न पड़े रहते हैं।

ऊपर बताए हुए सब उड़ने वाले साँप विषहीन होते हैं। विषैले साँपों में बूम स्लैंग, हरा माम्बा तथा किर्कलैंड वृक्ष-साँप हैं। बूम स्लैंग साँप 5 फुट तक लम्बा होता है और दक्षिणी एशिया के उष्ण प्रदेशों में पाया जाता है। एक समय लोग इसे विषहीन साँप समझते थे और लंदन की पशुशाला में रहनेवाले उसको हाथ में उठाते रहते थे, परन्तु अब निरीक्षण के उपरान्त मालूम हुआ कि यह विषैला होता है। यद्यपि इसके विषदंत बहुत छोटे होते हैं तो भी इसका विष छोटे जीवों को मारने के लिए काफी तीव्र होता है। यहाँ तक कि मनुष्य के लिए भी इसका विष घातक होता है। कुछ वर्षों पहले एक ऐसे ही साँप ने एक मनुष्य की बाँह में काट लिया था। थोड़े समय के पश्चात विष के चढ़ने के लक्षण प्रकट होने लगे और रोगी की दशा प्रति मिनट शोचनीय होने लगी, यहाँ तक कि तीसरे दिन डाक्टर को उसके जीवन की कोई आशा न रही। परन्तु भाग्यवश रोगी किसी प्रकार बच गया और तीन महीने बाद ठीक हो गया। छोड़े जाने पर बूम-स्लैंग अपनी गर्दन को फुला लेता है और शत्रु को डराता है। इस साँप में यद्यपि विषदंत नहीं होते हैं, फिर भी लोग इसको विषैला समझते हैं, क्योंकि यह आक्रमण के समय भयानक रूप धारण कर लेता है और कभी-कभी काट भी लेता है। बाह्य रूप में यह कोड़ेदार साँप से मिलता-जुलता है और शीघ्रता से पहचाना नहीं जा सकता। इसके शरीर का रंग कत्थई होता है। अतः झाड़ियों और पौधों के बीच में पहचाना नहीं जा सकता है। हरा माम्बा अत्यन्त

विषैला होता है और दक्षिणी तथा उष्ण अफ्रीका में बहुतायत से पाया जाता है। यह दस फुट लम्बा होता है। यहाँ के निवासी इसके भयानक प्रभाव से बहुत डरते हैं और ऐसे साँपों के निवास स्थान के पास कभी नहीं जाते। इन निवासियों में यह अन्ध विश्वास है कि यदि ये लोग एक भी माम्बा को मार डालेंगे तो उनके देवता भी नाराज हो जाएंगे। इसलिए ये लोग इन साँपों को श्रद्धा की दृष्टि से देखते हैं। अन्य साँपों के सदृश्य माम्बा पास आते हुए मनुष्य पर आक्रमण करता और काटने के लिए उसका पीछा भी करता है। इसकी तेज चाल से प्रतीत होता है कि इसमें प्रतिहिंसा का भाव कितना अधिक है। इसके काटने से मनुष्य तुरन्त मर जाता है। इसलिए इससे बचने के लिए बहुत तेजो से भागना पड़ता है।

अन्डे खाने वाला डेसीतेलटिस साँप एक विचित्र प्रकार का वृक्ष वाला साँप है। यह उष्ण तथा दक्षिणी अफ्रीका में मिलता है। यह केवल 2 फुट लम्बा होता है। परन्तु इसके आन्तरिक अंगों की बनावट विचित्र है। कुछ दाँत इसके गले में पाये गए हैं जिनको 'थ्रोट टीथ' कहते हैं। यह साँप चिड़ियों के अंडों के ऊपर अपना जीवन व्यतीत करता है। इसके दाँत बहुत छोटे और थोड़े होते हैं। यह अंडों को पूरा ही निगल जाता है। जब अंडा गले तक पहुँचता है तब 'थ्रोट टीथ' उसे फोड़ देता है जिसके कारण अंडे का रस पेट में चला जाता है और को साँप अपने मुँह से

बाहर निकाल देता है। साधारणत: यह साँप चिड़ियों के अंडों पर ही जीवन निर्वाह करता है। परन्तु उसे यदि अंडे न मिल सके तो वह पास के खलिहान में जाता है और मुर्गी के अंडों को खा जाता है।

अपने मुँह के आकार से भी ज्यादा बड़े अंडों को भी वह खा जाता है। दूर से देखने में ऐसा मालूम होता है कि एक आदमी फुटबाल निगल रहा है। 'ग्रेट टीथ' तक पहुँचने के पहले साँप का गला इतना फूल जाता है कि देखकर यह भय लगता है कि गला फटने वाला है।

साँप के शत्रु

साँप के अनेक शत्रु हैं। केवल मनुष्य ही उनको नहीं मारते अन्य स्तनधारी जीव तथा चिड़ियाँ भी इनका शिकार करती हैं। यहाँ तक कि इनके कुछ भाई-बन्धु भी आपस में एक दूसरे को खा डालते हैं। ऐसा भी कहा जाता है कि छोटी-छोटी चीटियों ने साँपों पर आक्रमण कर इन्हें खा डाला है।

नेवला साँप का कट्टर शत्रु समझा जाता है। यह अत्यन्त चतुर होता है और आक्रमण के समय उग्र रूप धारण कर लेता है। ऐसा कहा जाता है कि स्याही के समान साँप के विष नेवले पर प्रभाव नहीं होता। आधुनिक काल में नेवले के शरीर पर विष के कुछ प्रयोग किए गए हैं जिनसे मालूम होता है कि यदि एक विषैला साँप नेवले को भलीभाँति काट ले तो वह बच नहीं सकता भाग्यवश नेवले को साँप काटने में सफल नहीं होता क्योंकि नेवला इतना तेज होता है कि साँप को काटने के लिए कोई अवसर नहीं देता है। भारतवासियों का अन्ध विश्वास है कि जब नेवले को साँप काटता है तो वह एक जड़ी खा लेता है परन्तु यह बात सत्य नहीं है। साँप और नेवले की लड़ाई प्रसिद्ध है। इसका वर्णन बहुत लेखकों ने किया है। सबकी यह राय है कि नेवला बहुत होशियार होता है और सदा अपनी चालाकी से साँप के विष से

बचा रहता है। नेवला साँप के चारों ओर दौड़ता रहता और समय पाकर साँप के टुकड़े-टुकड़े कर देता है, कुछ देर बाद साँप थक जाता है और पृथ्वी पर गिर पड़ता है परन्तु नेवला साँप से काफी दूर रहता है। मिस्र देश का नेवला अत्यन्त विचित्र है। मिस्रदेशीय उसे इक्यूकोन के नाम से पुकारते हैं। प्राचीन मिस्र के निवासी उसे श्रद्धा की दृष्टि से देखते थे क्योंकि वह घड़ियाल के अंडों को खा जाता था और इस प्रकार घड़ियाल के अंडों की संख्या बढ़ने नहीं पाती थी। मिस्र के प्राचीन चित्रों में नेवले का चित्र पाया गया है। हेरोडोट्स के मतानुसार इन नेवलों का शव मिस्र के पवित्र स्थानों में गाड़ा जाता था।

सेही का विशेष भोजन साँप ही होता है। विषैले साँप का उससे बचना कठिन हो जाता है। ऐसा कहा जाता है कि सेही पर विष का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। जीव विज्ञान वेत्ताओं ने इसके शरीर का भलीभाँति निरीक्षण किया है। उनकी राय है कि सेही नेवले की भाँति होशियारी से शत्रु को मार डालती है और सदा साँप के काटने से अपने को बचाती रहती है। जब सेही किसी साँप को देख लेती है तो शान्तिपूर्वक खड़ी हो जाती है और फिर एकाएक शत्रु पर आक्रमण करती है और दाँतों से थोड़ा सा मांस निकाल लेती है फिर वह लौट जाती है और मुँह को शरीर के अन्दर घुसेड़ लेती है, इसी बीच में साँप क्रोधित होकर काटने दौड़ता है परन्तु सेही के नुकीले काँटों से टकराकर चुपचाप लौट

जाता है । अब फिर सेही सिर उठाकर दौड़ कर काटती है । इस प्रकार 3 या 4 बार के पश्चात साँप का अन्त हो जाता है ।

दक्षिण तथा मध्य अमेरिका में एक स्तनधारी जीव पाया जाता है जिसका नाम आरमिडैली है । यह भी साँप का शत्रु है । इसका शरीर एक कड़े कवच से ढका रहता है जिसके कारण साँप इस जीव को काट नहीं सकता । आरमिडैली अपने तेज दाँतों से साँप को कुतर डालता है ।

अफ्रीका में एक छोटा जीव पाया जाता है जिसका नाम जोरिला है यह खरगोश के बराबर होता है और इसका शरीर काले तथा सफेद बालों से ढका रहता है । नाग तथा पफ ऐडर साँप का यह महान शत्रु है । आक्रमण के समय जोरिला अत्यन्त भयभीत प्रतोत होता है । जंगली सूअर भी साँप को खा लेते हैं ।

कुछ चिड़ियाँ भी साँपों के शत्रु होती हैं । सेक्रेटरी चिड़ियाँ साँपों को कभी जीवित नहीं छोड़ती । यह अफ्रीका में पायी जाती है ।

आस्ट्रेलिया का कौडियाला पक्षी साँप का कट्टर शत्रु है । इसमें एक विचित्रता है कि यह थोड़े-थोड़े समय पर हँसता है । सेक्रेटरी चिड़िया की भाँति कोड़ियाला पक्षी को कानून के अनुसार सरकार मारने नहीं देती ।

करांकुल के लिए साँप भोज्य पदार्थ है । अमरीका में जंगली करांकुल एक झुंड बनाकर एक स्थान पर इकट्ठा हो जाते हैं । ये

मछली और पनिहा साँप पर धावा बोलते हैं, ये अपने पैरों से जोर के साथ कीचड़ में चलते हैं जिसके कारण वहाँ पर रहने वाले जीव ऊपर चले आते हैं जिनको ये फौरन पकड़कर खा लेते हैं। ओड्-यूबोन का कथन है कि दस या पन्द्रह मिनट के अन्दर सैकड़ों मछलियों, छोटे घड़ियाल तथा पनिहा साँप सतह पर तैरने लगते हैं। चिड़ियाँ इनको चाव के साथ खाने लगती हैं, फिर ये किनारे की ओर चली आती हैं। एक घंटे तक वे इस प्रकार आराम करती हैं और बाद में फिर पानी में जाती हैं और कीचड़ को हिलाकर अपना पेट भरती हैं।

अब उन साँपों का वर्णन किया जाएगा जो अन्य छोटे साँपों को खाते फिरते हैं। इसके अन्तर्गत नागराज का प्रथम स्थान है। यह उत्तरी अमेरिका में विषैले तथा विषहीन साँपों को निगल जाता है। इस प्रकार यह साँप मनुष्य तथा अन्य प्राणी की एक बड़ी सेवा करता है। रैटल साँप, कायरहेड तथा मुकासिन साँप का भोजन इसे पसन्द है। यदि इसने इन साँपों को केवल काटकर छोड़ दिया, तब इसके विष का प्रभाव उन पर नहीं होता है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि दूसरे देशों के विषैले साँप यदि अमेरिका के नागराज को काट ले तो यह तुरन्त मृत्यु का आखेट बन जाता है। नागराज केवल अमेरिका के विषैले साँपों के विष से मुक्त है। यहाँ तक कि नागराज करैत को भी खा जाता है।

कोरल साँप तथा अफ्रीका का पीला नाग, दोनों साँप भक्षी

जीव हैं। अब समस्या यह है कि साँप अपनी ही जाति के साँप के विष के प्रभाव से मर जाता है या दूसरी जाति के साँप उसके विष से मर जाते हैं। भारतीय साँपों पर सर जोजेफ फ़ायर ने बहुत प्रयोग किए हैं। उनका कहना है कि एक विषैले साँप पर अपने देश के या विदेश के अपनी जाति या अन्य जाति के विषैले साँप के विष का असर नहीं होता। पर विषहीन साँप सब विषैले साँपों के विष से मर जाते हैं। परन्तु फिज साइमन इस कथन से सहमत नहीं हैं। उनका विचार है कि यदि अफ्रीका के पीले नाग का विष उसी के शरीर में प्रवेश किया जाय तो वह अन्त में मर जायगा। बकलैंड पफऐडर के विषय में इस प्रकार वर्णन करते हैं—हमारी पशुशाला के बाग में एक चिड़िया दो पफऐंडर के बीच में दी गयी। उसको देखते ही दोनों दौड़ पड़े और एक दूसरे से चिपट गये। इस दशा में एक ने दूसरे के सिर पर चोट की। दो मिनट बाद लोगों ने देखा कि घायल पफऐंडर पृथ्वी पर चक्कर काटने लगा और फिर गिर पड़ा। इसी बीच दूसरा साँप तुरन्त दौड़कर अपने रहने के स्थान पर चला गया। रखवाले ने बतलाया कि मरा हुआ पफऐंडर थोड़ी देर बाद जीवित हो गया, परन्तु उसमें लकवा मारने के लक्षण आ गए। उसका सिर एक ओर मुड़ा हुआ था। वह सिर को सीधा नहीं कर सकता था और यदि कोई उसे छूता तो वह तुरन्त क्रोधित हो जाता था।

संसार में चीटियाँ अद्भुत जन्तु हैं। जब चीटियों का कोई विशाल झुंड कहीं जाता है तब रास्ते में यदि कोई जीव मिलता

है तो उसको सब चीटियाँ मिलकर या तो भगा देती हैं या मारकर खा जाती हैं। कभी-कभी तो एक मील के घेरे में चीटियाँ ही चीटियाँ दिखलाई देती हैं। जब ये सूखी पत्तियों पर चलती हैं तब ऐसा मालूम पड़ता है मानों कोई हंसिया से कोई वस्तु काट रहा है। लुई पी० बावलर का कथन है कि चीटियों के झुण्ड ने एक साँप को जीवित नहीं छोड़ा। एक समय इन्होंने एक होर्न वाइपर और चीटियों के एक झुण्ड के बीच में युद्ध होता हुआ देखा। चीटियाँ साँप के सारे शरीर पर लिपटी हुई थीं और अपने दाँतों से साँप का शरीर चोंध रही थीं। पन्द्रह मिनट तक साँप चीटियों के बीच चलता फिरता रहा। इसके पश्चात चलना-फिरना धीमा हो गया। अंत में साँप ने प्राण छोड़ दिए। मरने के दो मिनट बाद ही साँप के शरीर के दो इंच भाग के मांस को चीटियों ने खा डाला। इस प्रकार कुछ और मिनट के बाद केवल ढांचा ही रह गया।

कुछ छिपकलियों को भी साँप से अत्यन्त प्रेम होता है। आस्ट्रेलिया की चपटी पूँछ वाली छिपकली तथा शीशे के साँप के समान दिखने वाली छिपकली, दोनों साँप भक्षी जीव हैं।

हमारा बाल साहित्य

१.	किलकारी	शिक्षार्थी
२.	बन्दर का नाच	शिक्षार्थी
३	रोचक जन्तुओं की दुनिया	शुकदेव प्रसाद
४	...मा के ये वीर	डा० शिव प्यारी सहगल
५.	मालूम ...	विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद'
६.	स्वतंत्रता के प्रिय सेनानी	विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद'
७.	उत्सव गीत	विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद'
८.	नन्हे मुन्नों की कविताएँ	विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद'
९.	नन्हा वीर	रूप सिंह चन्देल
१०.	जादुई छड़ी	रूप सिंह चन्देल
११.	ऐसे थे शिवाजी	रूप सिंह चन्देल
१२.	अनोखी धरती अनोखे लोग	डा० शिवतोष दास
१३.	छिपकली कछुआ और घड़ियाल	मीना दास
१४.	सापों की दुनियाँ	निवेदिता दास
१५.	बाबा उवाच—बाबा बोले	डा० हरद्वारी लाल शर्मा
१६.	दूसरा स्वराज्य-सुराज	डा० हरद्वारी लाल शर्मा
१७.	गंदी बस्ती में बाबा	डा० हरद्वारी लाल शर्मा
१८.	घड़ा भर गया	डा० भास्कर त्रिपाठी

प्रकाशक

मधु प्रकाशन

42, ताशकन्द मार्ग, इलाहाबाद-211001